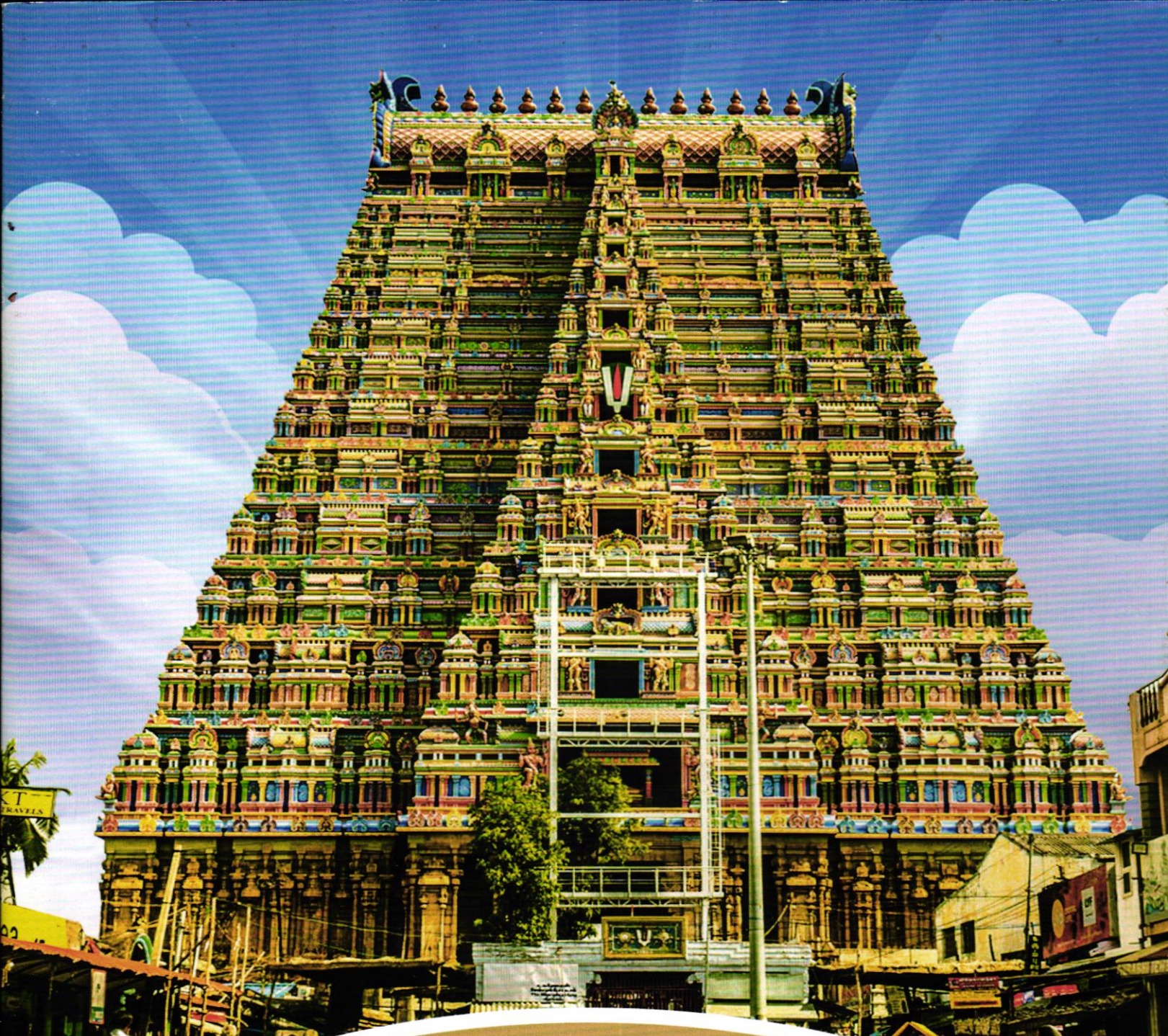

तिरुच्चि दर्पण

திருச்சி தர்பண் TIRUCHY DARPAN

सीमा शुल्क मुख्य आयुक्त (निवारक) जोन, तिरुच्चिराप्पल्लि
नं 1 विल्लियम्स रोड, कन्टोनमेंट, तिरुच्चिराप्पल्लि 620 001

CHIEF COMMISSIONER OF CUSTOMS (PREVENTIVE) ZONE,
NO.1, WILLIAMS ROAD, CANTONMENT, TIRUCHIRAPPALLI 620 001

तूत्तुक्कुडि, सीमा शुल्क की टाइम रिलीस स्टडी का माननीय अध्यक्ष, सीबीआइसी श्री एस. रमेश, भा.रा.से द्वारा 17 दिसंबर 2018 को बेंगलूरु में विमोचन

बैठक भवन के उद्घाटन के अवसर पर श्री एस.के. पांडा, माननीय सदस्य सीबीआईसी के साथ मुख्य आयुक्त सीमा शुल्क, आयुक्त सीमा शुल्क एवं आयुक्त जीएसटी।

तिरुच्चि दर्पण

TIRUCHY DARPAN திருச்சி தர்பண்

सीमा शुल्क (निवारक) जोन, तिरुच्चिराप्पल्लि
CUSTOMS (PREVENTIVE) ZONE, TIRUCHIRAPPALLI

अंक : 2 இதழ் : 2 ISSUE : 2

2019 जनवरी 2019 ஜனவரி 2019 January

பொறையொருங்கு மேல்வருங்கால் தாங்கி இறைவற்கு
இறையொருங்கு நேர்வது நாடு – திருவள்ளுவர்

एक साथ जब आ पड़े, जब भी सह सब भार।
देता जो राजस्व सब, है वह राष्ट्र अपार॥

तिरुवल्लुवर

(हिन्दी अनुवाद – मु.गो. वेंकटकृष्णन)

प्रधान संपादक श्री रंजन कुमार राउतरे मुख्य आयुक्त	**Editor-in-Chief** Shri Ranjan Kumar Routray Chief Commissioner
प्रबंध संपादक श्री **अशोक** प्रधान आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) तिरुच्चिराप्पल्लि श्री **के.वि.वि.जि. दिवाकर** आयुक्त, सीमा शुल्क गृह तूतुक्कुडि	**Managing Editors** Shri **Ashok** Principal Commissioner, Customs (Preventive) Shri **K.V.V.G. Diwakar** Commissioner, Customs House, Tuticorin

संपादक दल

सर्वश्री / श्रीमती

रंजन कुमार राउतरे	मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिराप्पल्लि	प्रधान संपादक
अशोक	प्रधान आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) तिरुच्चिराप्पल्लि	प्रबंध संपादक
के.वी.वी.जी. दिवाकर	आयुक्त, सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि	प्रबंध संपादक
एस. ईश्वर रेड्डी	संयुक्त आयुक्त, सीमा शुल्क, (मुआका), तिरुच्चिराप्पल्लि	संपादक

भाषा संपादक

एम. राजराजेश्वरी	वरिष्ठ अनुवादक, मु आ(नि) कार्यालय	सर्व कार्यभारी संपादक
हिन्दी		
देवेन्द्र सिंह सिकरवार	कनिष्ठ अनुवादक, मु आ(नि) कार्यालय	
तमिल		
वी. स्वामिनाथन,	अधीक्षक, अपील, सीमा शुल्क मुख्यालय, तिरुच्चिराप्पल्लि	
अंग्रेजी		
एन. सत्यनारायणन	अधीक्षक, मु आ(नि) कार्यालय, तिरुच्चिराप्पल्लि	

EDITORIAL BOARD

S/Shri/Smt

Ranjan Kumar Routray	Chief Commissioner, Customs (Preventive)	Editor-in-Chief
Ashok	Principal Commissioner, Customs (Preventive)	Managing Editor
K.V.V.G. Diwakar	Commissioner, Customs House, Tuticorin	Managing Editor
S. Eswar Reddy	Joint Commissioner, CC(P) Office	Editor

Language Editors

M. Rajarajeswari	Senior Translator, CC(P) Office Trichy	Editor in overall charge
Hindi		
Devendra Singh Sikarwar	Junior Translator, CC(P) Office Trichy	
Tamil		
S. Swaminathan,	Superintendent, Appeals, Customs Hqrs., Trichy	
English		
N. Sathyanarayanan	Superintendent, CC(P) Office Trichy	

The articles appearing in **Tiruchi Darpan** do not necessarily reflect the views of the Department. The responsibility for the opinions expressed and accuracy of the statements rests with the authors.

Front cover image : Srirangam Temple **Back cover image : Trichy Cauvery**

S.K. PANDA
Special Secretary & Member

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
वित्त मंत्रालय / राजस्व विभाग
MINISTRY OF FINANCE / DEPARTMENT OF REVENUE
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क एवं सीमा शुल्क बोर्ड
CENTRAL BOARD OF EXCISE & CUSTOMS
नार्थ ब्लाक, नई दिल्ली - 110 001
NORTH BLOCK, NEW DELHI - 110 001
Tel. No. +91-11-23092303, Fax No. +91-11-23092417

संदेश

प्रसन्नता का विषय है कि तिरुच्चि सीमा शुल्क (निवारक) जोन द्वारा "तिरुच्चि दर्पण" के द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। हिन्दीतर राज्य में त्रिभाषी पत्रिका के प्रकाशन से अंदाज लगाया जा सकता है कि राजभाषा हिन्दी की स्थिति संपूर्ण भारत में सुदृढ़ हो रही है तथा स्थानीय भाषाएं भी पनप रही हैं। भाषाई दृष्टि से यह काफी संतोषजनक बात है। यह अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भाषाई जागरूकता को भी दर्शाता है। आशा है राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में "तिरुच्चि दर्पण" सतत योगदान देती रहेगी।

शुभ कामनाओं सहित ।

(एस.के.पांडा)

ज़ोनल सदस्य

संदेश

प्रधान संपादक की कलम से .....

मेरे लिए यह हार्दिक प्रसन्नता की बात है कि तिरुच्चिराप्पल्लि सीमा शुल्क (निवारक) जोन अपनी त्रिभाषी पत्रिका "तिरुच्चि दर्पण" का द्वितीय अंक निकालने जा रहा है। मुझे विश्वास है कि पत्रिका के प्रकाशन से कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों / कर्मचारियों में हिन्दी के प्रति जागरूकता पैदा होगी जिसके फलस्वरूप सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा। इस तरह की विभागीय पत्रिकाएँ, जोन की गतिविधियों का एवं कार्यरत अधिकारियों की प्रतिभा का दर्पण है । मैं इस पत्रिका के माध्यम से इस जोन के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपनी सरकारी कामकाज में अधिकाधिक राजभाषा का प्रयोग करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहें।

पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ। उम्मीद है कि इस अंक में प्रकाशित तीनों भाषाओं की रचनाएं पाठकों को पसं आएं।ी। समस्त पाठकगण की राय की प्रतीक्षा रहेगी ।

रंजन कुमार राउतरे

मुख्य आयुक्त

संदेश

प्रबंध संपादक की कलम से.....

हम सब के लिए गौरव की बात है कि तिरुच्चिराप्पल्लि सीमा शुल्क (निवारक) जोन अपनी त्रिभाषी पत्रिका "तिरुच्चि दर्पण" का द्वितीय अंक निकाल रहा है। इसके प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य ही राजभाषा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है । हिन्दी, राजभाषा होने के साथ-साथ हम सब भारतीयों के बीच संपर्क-भाषा की भूमिका भी निभा रही है । राजभाषा दर्जा प्राप्त हिन्दी के प्रचार के लिए प्रकाशित इस तरह की पत्रिकाएँ अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को उजागर कराती हैं ।

सभी लेखक बधाई के पात्र हैं। कृपया अपने बहुमूल्य सुझावों से हमको अवगत कराएं ताकि पत्रिका के आगामी अंक को और अधिक सार्थक रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

अशोक

(अशोक)

प्रधान आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक),
तिरुच्चिराप्पल्लि

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि सीमा शुल्क (निवारक) जोन, तिरुच्चि की ओर से पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी त्रिभाषी पत्रिका "तिरुच्चि दर्पण" का प्रकाशन किया जा रहा है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों की मौलिक अभिव्यक्ति के लिए विभागीय पत्रिका का प्रकाशन महत्वपूर्ण है। पत्रिका रोचक जानकारी के साथ-साथ विभाग की वर्ष भर की उपलब्धियों का चित्रण भी करती है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार में विभागीय पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के साथ-साथ स्थानीय भाषा तमिल के प्रचार-प्रसार में भी सहायक होगी।

मुझे आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में उत्कृष्ट, पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रेरक सामग्री का समावेश किया गया है। इस पत्रिका से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप से जुड़े सभी व्यक्तियों को मैं, हार्दिक बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देता हूँ।

के.वि.वि.जि. दिवाकर

के.वि.वि.जि. दिवाकर,

आयुक्त, सीमा शुल्क गृह, तूत्तुक्कुडि

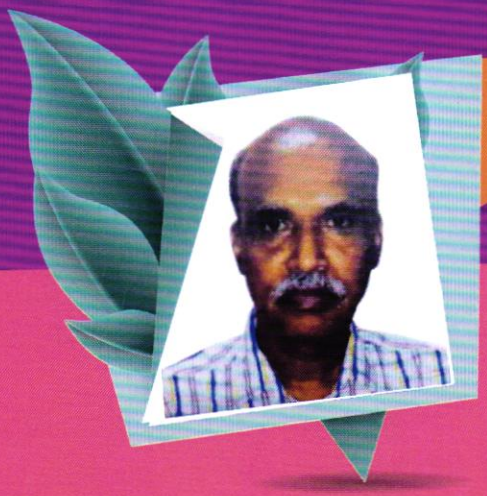

संदेश

संपादकीय .....

तिरुच्चि दर्पण के द्वितीय अंक के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

भारत एक बहुभाषी देश है। अपनी क्षेत्रीय/प्रांतीय भाषाओं का विकास करना भी हमारा दायित्व है। सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करते हुए हमें संघ की राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में भी निरंतर वृद्धि लानी है। हिन्दी भाषा का सामर्थ्य, संप्रेषणीयता और सांस्कृतिक विरासत ऐसे गुण है जो भाषा को महिमामंडित करते हैं। अथः इस भाषा का ज्ञान समान्य जन तक पहुँचना आवश्यक है ।

मैं उन सभी रचनाकारों, पत्रिका के प्रकाशन में संरक्षक, मार्गदर्शक एवं सहयोगीगणों को आभार प्रकट करता हूँ जिनके प्रयास से पत्रिका का नया अंक अस्तित्व में आया है । आशा है प्रथम अंक की भांति द्वितीय अंक भी आपको पसंद आएगा। आपकी प्रतिक्रिया, सुझावों की अधीरता के साथ प्रतीक्षा रहेगी ।

एस. ईश्वर रेड्डी

संयुक्त आयुक्त (मुआका)

तिरुच्चि

faith

Ranjan Kumar Routray, Chief Comm

FAITH

Do not frighten me that sun will set soon
That darkness will spread to each nook and corner
That wild animals will roam free with blood in teeth

I know the sun will rise again
Dispelling gloom and darkness
Bathing in the rays of morning sun
I will rise again
To a new sunrise of hope and faith.

DREAM

Please do not disturb me in the midst of
my dream
It is enchanting
Please do not disturb me
The beautiful span of dream is
invigorating
And joyful

Please do not wake me up
The fear real or imaginary
The trial and tribulation real or unreal
Will return to claim
Portions of existence

Please do not wake me up
in the midst of my dream
its serenity and peacefulness

भरोसा

अंग्रेज़ी मूल से एम. राजराजेश्वरी, वरिष्ठ अनुवादक द्वारा अनूदित)

मुझे डराओ मत कि सूरज जल्दी डूब जाएगा,
कोने कोने में अन्धकार फैल जाएगा,
जंगली जानवर खून से सने हुए दांत लिए घूमेंगे

उदासी और अन्धकार को भगाकर
मुझे मालूम है कि सूरज का उदय होगा फिर
सुबह के सूरज के किरणों में सराबोर होकर मैं
आशा और भरोसा के एक नए सूर्योदय में
फिर उठूँगा

सपना

(अंग्रेज़ी मूल से एम. राजराजेश्वरी, वरिष्ठ अनुवादक द्वारा अनूदित)
मेरे सपने के बीच में न डालें बाधा
यह अतिमोहक है
छेड़ो मत मुझको
सुंदर स्वप्न-काल में
यह आनंदपूर्ण और स्फूर्ति दायक है

मत जगाओ मुझे
वह भय, असल या काल्पनिक
मुसीबत व तकलीफ, असल हो या नकल
अस्तित्व के अंशों का
दावा करते हुए वापस आएगा

मत जगाओ मुझे
सपने के बीच में
उसकी निस्तब्धा और शांति से

(This poem bagged the Editor's Award in 2007)

जरा गौर फरमाइए

विक्रम कुमार, अधीक्षक
सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि

सोशल मीडिया आज न सिर्फ भारतीयों बल्कि विश्व के अधिकांश लोगो के जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। इसी सोशल मीडिया के माध्यम से प्राप्त कुछ प्रेरक कथनों / संदेशों को साझा करना चाहता हूँ जो हमारे जीवन को सार्थक बनाने में मार्गदर्शक के रूप में उपयोगी हो सकते हैं:-

1. मार्गदर्शन सही हो तो एक नन्हा सा दीपक भी किसी सूरज से कम नहीं।
2. निकलता है हर सुबह एक नया सूरज यह बताने के लिए कि उजाले बाँट देने से उजाले कम नहीं होते।
3. पराजय तब नहीं होती जब आप गिर जाते हैं। पराजय तब होती है जब आप वापस उठने से इनकार कर देते हैं।
4. Every situation in life is temporary so when life is good make sure you enjoy & receive it fully and when life is not so good, remember that it will not last forever and better days are on the way.
5. श्रेष्ठता जन्म से नहीं आती गुणों के कारण इसका निर्माण होता है। दूध-दही, छाछ-घी सब एक ही कुल के होते हुए भी सबके मूल्य अलग-अलग होते हैं।
6. Wrong is wrong even if everyone is doing it, Right is Right even no one is doing it.
7. It is good to have money and the things that money can buy. But it is good too, to check up once in a while and make sure that you haven't lost the things that money can't buy.
8. Sometimes we need to lose our way to find our way.
9. Kindness is a language the blind can see and the deaf can hear.
10. किरण चाहे सूरजी की हो या फिर आशा की जीवन के सभी अंधकार को मिटा देती है।
11. अच्छे लोगों की परीक्षा कभी न लीजिए क्योंकि ये पारे की तरह होते हैं। जब आप इन पर चोट करते हैं तो वे टूटते नहीं है लेकिन फिसल कर चुपचाप आपकी जिंदगी से निकल जाते हैं।
12. Never think, I have nothing
    Never think, I have everything
    But always think, I have something and I can achieve anything.
13. नींद और निंदा पर जो व्यक्ति विजय पा लेते हैं। उन्हें आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता।
14. हमेशा मुस्कराते रहिए – कभी अपने लिए – कभी अपनों के लिए।
15. yesterday - Experience
    Today - Experiment
    Tomorrow - Expectations
    Use your experience in your experiment to achieve your expectations.
16. What's done is done, What's gone is gone, It is okay to look back and think of fond memories but keep moving forward.
17. बनावटी लोगों से संभल कर रहना, पहले रो-रो कर आपके दुःख दर्द पूछेंगे फिर हँस-हँस कर जमाने को बताएंगे।
18. जिंदगी भर सुख कमाकर दरवाजे से घर में लाने की कोशिश करते रहे, पता ही नहीं चला कि कब खिडकियों से उम्र निकल गई।
19. गुस्से के समय थोड़ा रुक जाए और गलती के समय थोड़ा झुक जाएं, जीवन आसान हो जाएगा।
20. अगर एक हारा हुआ इंसान हारने के बाद भी मुस्करा दे तो जीतने वाला अपनी जीत की खुशी खो देता है।
21. एकता – मिट्टी ने की तो ईट बनीं
    ईट ने की तो दीवार बनी।
    दीवार ने की तो घर बना।
    ये बेजान चीजें हैं, जब ये एक हो सकती हैं तो हम सब क्यों नहीं।

व्यापार करने में सुगमता

रंजन कुमार राउतरे, भा.रा.से.
मुख्य आयुक्त
(अंग्रेज़ी मूल से एम. राजराजेश्वरी, वरिष्ठ अनुवादक द्वारा अनुदित)

'व्यापार करने में सुगमता' विश्व बैंक द्वारा प्रकाशित एक निर्देशिका है । यह एक कुल संख्या है जिसमें विभिन्न मापदंड शामिल हैं, जो एक देश में व्यापार करने की सुगमता को परिभाषित करते हैं । विभिन्न अर्थ व्यवस्था के 'डिस्टेंस टू फ्रांटियर स्कोर' को एकत्रित करके गणना की गयी है । सूचक, जिनके लिए 'डिस्टेंस टू फ्रांटियर स्कोर' की गणना की गयी है उसमें ऋण लेना और कर अदायगी तंत्र शामिल है ।

२. विश्व बैंक ने 'व्यापार करने में सुगमता' रिपोर्ट को 2018 में प्रकाशित किया है । भारत का समग्र रैंकिंग पिछले साल के 100 रैंकिंग से 77 पर पहुँच गया है । यह एक महत्वपूर्ण विकास है । यह समाज में, हितधारकों की उन्नति के लिए अर्थशास्त्र में परिवर्तन लाने के सारे प्रयासों का संक्षेपन करता हे ।

३. उच्च कर अनुपालन प्राप्त करते समय, सरल कार्यविधि से काम को आसान बनाकर कर शासन की व्यवस्था संचालन करने का श्रेय सीबीआइसी नेतृत्व और मंत्रालय को जाता है । यह स्पष्ट है कि देश मजबूत वैश्विक मानकों की दिशा में अपनी सतत विचलन जारी रख रहा है । यह ध्यान देने योग्य है कि सीमा पार व्यापार से संबंधित संकेतों में अधिकतम नाटकीय सुधार दर्ज किए गए हैं । 146 के रैंक से 80वॉ रैंक तक उन्नत हुआ हे । इसको सबसे बडा अंतर कहा जा सकता है ।

४. भारत ने निर्यात और आयात करने के समय एवं लागत को कई पहल द्वारा कम किया है जिसमें कंटेनर का इलेक्ट्रानिक सीलिंग, समर्थन कागजात का इलेक्ट्रानिक प्रस्तुतीकरण, प्राधिकृत आर्थिक प्रचालक योजना आरंभ करना और शारीरिक परीक्षण के बिना आरएमएस आधारित कार्गो की निकासी आदि शामिल है ।

५. इस संबंध में सीबीआइसी, नई दिल्ली के माननीय अध्यक्ष श्री एस. रमेश, भा.रा.से ने अपने सहकर्मियों के नाम के 01.11.2018 दिनांकित साप्ताहिक सूचना पत्र में कहा है :-

५.१ 'कारोबार रैंकिंग करना बोध आधारित है । आश्चर्य की बात यह है कि, यद्यपि कुछ हद तक गलत है, कार्गो रिहाई समय को व्यापक रूप से सीमा शुल्क द्वारा माल की निकासी करने का समय माना जाता है । वास्तव में निकासी की इस बड़ी प्रक्रिया में कई एजेंसियॉ सम्मिलित है और वह कई हितधारकों के लिए अगोचर है और इसका कारण है निकासी प्रक्रिया में सीमा शुल्क का प्रमुख स्थान । अत: अन्य एजेंसियों द्वारा विनियामक

अनुमोदन की प्रतीक्षा में निकासी में देरी होने की स्थिति में भी यह समझा जाता है कि सीमा शुल्क ही देरी के लिए जिम्मेदार है । निकासी प्रक्रिया में सीमा शुल्क की प्राधान्यता के कारण, भागियों की बहुलता के होते हुए भी संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र सुधारने का बोझ सीमा शुल्क के कंधों पर पडा है । स्विफ्ट (एकल विंडो), एईओ (प्राधिकृत आर्थिक प्रचालक) योजना, सुधार किए जोखिम नियम, फ्लेगशिप सुधार ई-संचित, खेल परिवर्तक पहल डायरेक्टर पोर्ट डेलिवरी (डीपीडी), कंटेनरों की आरएफआइडी ई-सीलिंग आदि आरंभ करना, जैसे कई सुधार सीमा शुल्क ने आरंभ किए हैं जिन्होंने हमारे रैंकिंग को बढाने में सामूहिक रूप से मदद की है ।'

५.२ 'लाभदायक सुधारों की कल्पना करना और अमल में लाना पर्याप्त नहीं है । अंततोगत्वा सुधारों का प्रभावी कार्यान्वयन और निरंतर मॉनिटरिंग की आवश्यकता है । सीमा शुल्क के क्षेत्रीय अधिकारियों की भूमिका यहॉ पर अति महत्वपूर्ण हैं । सीबीआइसी द्वारा आरंभ किए गए सुधारों का कार्यान्वयन करके बुनियादी स्तर पर उत्तम और श्रेष्ठ काम करने के लिए आपको और आपकी टीम को बधाई देने में मुझे अति प्रसन्नता हो रही है । जेएनसीएच और दिल्ली सीमा शुल्क विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं क्योंकि उनके प्रभार के अधीनस्थ पत्तन विश्व बैंक टीम द्वारा मूल्यांकन में हिस्सेदार थे । तथापि विश्व बैंक सर्वेक्षण के प्रत्यर्थी इन पत्तन तक ही सीमित नहीं है । अत:, हमारा संपूर्ण सीमा शुल्क बंधुता, व्यापार एवं उद्योग समूह के हितधारक सहित सभी, प्रशंसा के पात्र है । सीमा शुल्क द्वारा आरंभ किए गए सुधारों के समर्थन और कार्यान्वयन में सिस्टम महानिदेशालय, सीबीआइसी द्वारा किए गए प्रयासों का यहॉ विशेष रूप से उल्लेख करने की आवश्यकता है ।

६. तमिलनाडु एवं पांडिचेरी राज्य में, तिरुच्चि जोन में, तस्करी-रोधी कार्य में बहुत अच्छे काम के अलावा, निर्यात और आयात में प्रवास समय की कटौती में उल्लेखनीय प्रगति भी की गयी है । पिछले वित्तीय वर्ष में बुक किए गए तस्करी-रोधी मामलों में सम्मिलित रकम लगभग रुपए 17 करोड़ है, वर्तमान वित्तीय वर्ष में यह रकम अक्तूबर 2018 तक रुपए 22 करोड़ है । इस वर्ष लगभग रुपए 4 करोड़ कीमत वाली विदेशी मुद्रा का अभिग्रहण तस्करी-रोधी प्रयासों में एक मील का पत्थर है । जहॉ तक व्यापार करने में सुगमता का संबंध है हाल के महीनों में निर्यात एवं आयात के लिए सीमा शुल्क द्वारा प्रवास समय और भी कम किया गया है । एक अध्ययन के अनुसार ड्यूटी अदायगी के बाद 48 घंटों में लगभग 87% के आयात कागजात की सीमा शुल्क द्वारा निकासी की गयी है । यह पिछले वर्ष लगभग 79 % था ।

७. अत: यह संपूर्ण देश के लिए और खास तौर पर सीबीआइसी के लिए यह एक महत्वपूर्ण घड़ी है । उल्लेखनीय परिवर्तनों और सुधारों को बनाए रखने का उत्साह सभी कार्यालयों में सभी स्तरों पर, सीबीआइसी और सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में सुस्पष्ट है ।

अजीब दुनिया

सुनील कुमार शर्मा
निरीक्षक

ये दुनिया वाले भी बड़े अजीब होते हैं।
कोई दुश्मन तो कोई हबीब होते हैं।
कुछ भी मुस्तकिल नहीं इस जहां में
कभी अपने दूर तो गैर करीब होते हैं।

जज्बात छुपाओ तो कायर समझ लेते हैं
दर्द ए दिल बताओ तो शायर समझ लेते हैं
समझ नहीं पाया मैं दस्तूर दुनिया का
जो नेकी करने वालों को नालायक समझ लेते हैं।

जो मुद्दा हुस्न का है तो यार भी रकीब होते हैं
महलों में रहके भी कुछ दिल से गरीब होते हैं।
जो फ़ना आशनाई पे अक्सर बदनसीब होते हैं।

कठिन शब्दार्थ

१. हबीब – Friend
२. मुस्तकिल – Permanent
३. दस्तूर – Rules
४. रकीब – Love competitors
५. आशनाई – Friendship or love affairs

अधूरा इश्क

इश्क की सरहद पे तन्हा मैं, खुद को तैनात करता हूँ
मुखातिब जब होता तुमसे, तो ना जाहिर जज्बात करता हूँ
मांगा है तुझे मैंने दर पे पीर फकीरों के भी
तू मेरे नाम हो जाए दुआ भर रात करता हूँ।

अरमान दिल के लबों पर ना आए, तो क्या गुनहगार हम ही हैं
इजहार ना किया तुमने भी तो क्या जिम्मेवार हम ही हैं
खामोश मैं रह जाता हूँ तो क्या, पहल मैं ही करूं जरूरी ही है
इस अधूरे इश्क के लिए, बोलो क्या कसूरवार हम ही हैं।

सोचकर कि मेरा इजहार ना तब्दील हो तेरी इन्कार में
धड़कनें बढ़ने लगें तो, क्या करू इस हाल में
जिक्र करता तेरा खुदा से ख्वाबों में ही बस बात करता
तू मेरे नाम हो जाए दुआ भर रात करता हूँ।

मेरे अधूरे इश्क की कहानी अब इश्तिहार लगती है
महबूब के इंतजार में मेरी तस्वीर भी बीमार लगती है
बेवकूफ है वे जो इल्जाम देते हैं बदसूरत चेहरों को
जिंदगी मेरी बर्बाद की उसने जो हसीन-ए-बहार लगती

मुकद्दर रूठा है मेरा या मुहब्बत में मिलावट है
तू संगीन है शायद या फिर झूठी बनावट है
खता मेरी है या तेरी ये तहकीकात करता हूँ
तू मेरे नाम हो जाए दुआ भर रात करता हूँ।

विश्वास

सुनील कुमार शर्मा
निरीक्षक

जीवन शय्या है पुष्पों की या शूलों का वास है,
उत्तर देता इस यक्ष प्रश्न का, मानव मन का विश्वास है।
विश्वास प्रबल है यदि मानव का, तो स्वप्न यथार्थ हो जाता है
विश्वास बदलता दृढ़ निश्चय में, तब पुरुषार्थ हो जाता है।
बीज नागफली के मन में बोकर, कैसे कमल उगा सकता है।
कंकर के धक्के से सागर में, कैसे ज्वार जगा सकता है।
घोर निराशामग्न है वो, या बाकी अभी आस है
उत्तर देता इस यक्ष प्रश्न का, मानव मन का विश्वास है।
सरल नहीं है सुगम नहीं, मन में विश्वास जगा पाना,
कठिन डगर है शूल बिछे, मुश्किल इन राहों पे चल पाना।
लेकिन कर्मठ नर के सिंहनाद से दुर्भाग्य भी सहमा रहता है,
और मजबूत इरादों के आगे तूफान थमा सा रहता है।
परचम फहराएगा जग में या बाधाओं का दास है,
उत्तर देता इस यक्ष प्रश्न का, मानव मन का विश्वास है।

सूर्य, चंद्र, भूगोल, खगोल, और भूगर्भ के राज को
मन मष्तिष्क की शक्ति से जीता हिम किरीट के ताज को
उठो धरा के नर नारी, नूतन निर्माण करो अपना,
विश्वास से निर्मित होता मानव, यथार्थ करों अपना सपना
उक्त पंक्तियाँ सत्य वचन है या मन में अविश्वास है,
उत्तर देता इस यक्ष प्रश्न का, मानव मन का विश्वास है।

सिनेमा का समाज पर प्रभाव

सुभाष कुमार
अधीक्षक, सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडी

सिनेमा, समाज में मनोरंजन का महत्वपूर्ण साधन है। सभी आयुवर्ग के व्यक्तियों पर इसका प्रभाव पड़ता है। ये प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों तरह का हो सकता है। अतः हम यहाँ पहले सकारात्मक प्रभाव पर विचार करेंगे।

सिनेमा किसी भी समाज का आईना होता है। समाज में जो भी घटित होता है उसी का चित्रण सिनेमा में दिखाया जाता है इसके साथ ही सिनेमा में जो कुछ दिखाया जाता है उसका समाज पर प्रभाव पड़ता है। "राज हरिश्चंद्र" नाटक का प्रभाव महात्मा गाँधी के जीवन पर कैसा हुआ था, सभी को विदित है। अतः हम सिनेमा के माध्यम से समाज से बुराइयों को दूर करने का प्रयास कर सकते हैं। आपसी भाईचारे को बढ़ाने में सिनेमा का महत्वपूर्ण योगदान है। सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में सिनेमा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सिनेमा से रोजगार के अवसर पैदा होते हैं। सिनेमा के माध्यम से हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को संजोए रख सकते हैं। आने वाली पीढियों में नैतिक मूल्यों का प्रसार कर सकते हैं।

जहाँ सिनेमा के अनगिनत सकारात्मक प्रभाव दिखाई देते हैं वहीं इसका नाकारात्मक पहलू भी है। इसका सबसे अधिक भयावह दुष्प्रभाव पाश्चात्य संस्कृति का प्रसार व भारतीय संस्कृति की अवहेलना है। सही मार्ग दर्शन के अभाव में युवावर्ग व बच्चों पर इसका नकारात्मक प्रभाव भी पड़ता है। बच्चे किसी विशेष किरदार की नकल करने लग जाते है। युवा अपने माता-पिता की आय को ध्यान में न रखते हुए फिजूलखर्ची करने लग जाते है। उनका ध्यान पढ़ाई से हटने लगता है फैशनेबल कपड़े या हेयर स्टाइल की ओर अधिक आकर्षित होने लगता है। जीवन में संयम का महत्व कम होने लगता है मन पसंद कार्यों में रुचि बढ़ जाती है फलस्वरूप उनकी उन्नति में बाधा पड़ती है।

आजकल ऐसी फिल्मों को यू/ए प्रमाण पत्र मिल जाता है जिन्हें भारतीय संस्कृति के संदर्भ में प्रामाणिक नहीं माना जा सकता है। नायक/नायिकाओं का अर्धनग्न हालात किसी गीत पर थिरकना युवा मन को निस्संदेह रूप विचलित करता है। कुछ फिल्मों में अप्रत्याशित व शी सफलता प्राप्त करने के गलत तरीकों को दर्शाया जा है। समाज की बुराइयों को दिखाने के लिए ऐसा विद्र समाज दिखाया जाता है जिसका बच्चों एव युवाओं कोमल मनः पटल पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है बच्चों में हिंसा एवं बुराइयों की प्रवृत्ति बढ़ने लगती है ईमानदारी एवं कठिन मेहनत करने की अपेक्षा आसा एवं शार्टकट तरीको से सफलता प्राप्त करने में रुचि बढ़ लगती है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि सिनेम का समाज पर सकारात्कम एवं नकारात्मक दोनों तर के प्रभाव पड़ते हैं। सेंसर बोर्ड एव अभभावकों की सावधानी व जिम्मेदारी से सिनेमा के सकारात्मक प्रभा को बढ़ाया जा सकता है तथा नकारात्मक प्रभव को कम किया जा सकता है। इसके लिए सरकार एवं समाज क निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए। सकारात्मक सोच क बढ़ाने वाली फिल्मों को बढ़ावा मिलना चाहिए तथ नकारात्म प्रभाव बढ़ाने वाली फिल्मों पर रोक लगन चाहिए।

निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निबंध

"हिन्दी का प्रचार-प्रसार"
"जय हिंदी जय हिंदुस्तान"

गौरव कुमार,
निरीक्षक, सीमा शुल्क गृह तूतुक्कुडि

सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कुडि में,
हिन्दी भाषा का हुआ खूब प्रचार-प्रसार
कर्मचारी और अधिकारी सब मिल कर करते मेहनत अपार।
खूब मेहनत कर सीख गए हिन्दी में करना कार्य व्यवहार।

रबड़ मुहर और नामपट्ट भी पहले यहाँ अंग्रेजी में थे
कर्मचारी और अधिकारियों के हस्ताक्षर सिर्फ अंग्रीजी में थे।
अंग्रेजी में थे सभी रजिस्टर, कार्यालय अंग्रेजी वाला था ।
अंग्रेजी वाले बाबू थे, अंग्रेजी का बोलबाला था ।।
अंग्रेज तो चले गए पर चलन रहा अंग्रेजी भाषा में।
सब कुछ था अंग्रेजी में पर लोकप्रियता मातृभाषा में।

धीरे-धीरे हुआ हिन्दी का खूब ही प्रचार-प्रसार
नामपट्ट, रबड़ मुहर, रजिस्टर का हुआ द्विभाषी कार्य
पत्राचार हो गया द्विभाषी, हुआ हिन्दी में हस्ताक्षर का प्रयोग
अधिकारी और कर्मचारी सब, अब करते हिंदी का खूब प्रयोग
हिन्दीतर अधिकारी भी अब पीछे नहीं रहना चाहते हैं।
प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ कक्षा में हिन्दी पढ़ने जाते है।
अब करते इसका उपयोग हिन्दी के प्रचार प्रसार में
इनके ही अथक परिश्रम से आई क्रांति हिन्दीतर क्षेत्र में

अब वह दिन दूर नहीं जब, हिन्दी भाषा बनेगी सूत्र
जिसके बंधन में बंधकर यह देश बनेगा अखंड अटूट
तभी हमारा गौरव होगा और होगी एक विशिष्ट पहचान
जय हिन्दी जय हिन्दुस्तान, जय हिन्दी जय हिन्दुस्तान।

CHILD ADOPTION AND INDIAN CULTURE

Pabitra Anand
W/o Sumeet Kumar,
Inspector, Customs Division, Trichy

Every child has a right to love and be loved and to grow up in an atmosphere of love and affection and of moral and material security. This is possible only if the child is brought up in a family.

The concept of adoption is not a new one; rather the custom and practice of adoption is continuing from the past. It is built into the Indian culture. If we look to Hindu religious texts, we have a number of examples of incarnations of God and Goddess, Warriors and learned women/men being raised by adoptive parents. There are several instances in Hindu scriptures that suggest that the concept of adoption of children has always existed, such as in the case of Krishna and Karna in the Mahabharat. The tales of Shakuntala and Andal also assume importance when it comes to the notion of adoption and entitlement.

In more recent international context, prominent personalities such as Nelson Mandela and Steve Jobs were adopted.

Child adoption in India has been a prevalent social practice from ancient times but with a different perspective. Generally the view is that when any individual completely lacks or loses his or her capability to beget a child, then the couple concerned adopts a child

In the past, a childless couple would 'adopt', a child from one's own family. But now, it is not always like this. Adoption is not limited to relative children.

The motives of people who adopt vary.

I) The primary considerations were the interest of th adoptive parents, namely the perpetuation of fami name and lineage, protection in old ag performance of death rites and salvation of th adoptive parents.

ii) Other motives to adopt could be a desire to give home to a child who needs one, wanting a child of th other gender, or for the welfare of destitute ar abandoned children.

Now, the trend is changing a lot. It is being noted th single-parent adoption is also being done in cities ar urban areas.

There was a lot of preference given to the male chi in the earlier times. Now with the changing times, th perception is also changing. New laws are also developin In India adoption is now regulated by the introduction the Hindu Adoptions and Maintenance Act, 1956. Variou radical changes in the Hindu law as to the persons wh could be adopted were brought in the new HAMA, 195 Under the Hindu law, the adoption of child means that th child is totally uprooted from the natural family an transplanted in the new family.

Prior to the Hindu Adoptions and Maintenance Ac 1956 only the adoption of son was recognised but after th

commencement of this Act, daughter's adoption is also legally recognised. This has been considered the major change. Now, more people are coming forward to adopt a girl child.

Moreover, earlier only male Hindus had the right to adopt or to give in adoption. But now it has been recognised that Hindu women can also adopt or give in adoption.

Adoption laws for other communities are different and complex in India. In recent times people through education and compassion are taking things with different perspective and gradually things are changing.

Adoption serves the double purpose of giving a child a home and giving the parents a child. It is a wonderful social institution that every civilised society ought to support.

Yet, in India, there is frequently a shroud of secrecy around adoption. Parents feel somewhat ashamed of letting their relatives and or acquaintances know of their adoption of children because of the perceived social stigma that would fall upon the child. This however, makes no sense and serves to illustrate how paradoxical our ideas of honour are.

Other aspect could be that adoption in a sense helps in population control. All children are God- gifted. So, there should not be any difference between one's own child and other's child. Rather than bringing more of their own children into existence, one can adopt existing children of others, which will ultimately serve two purposes : Population control and more importantly child welfare. Adopting child will be beneficial to women who can choose to work instead of giving birth on maternity leave and facing the troubles and complications of pregnancy. A biological child gives you nothing extra except a family resemblance.

There are so many children who do not have parents, home, food, etc. By adopting them, adoptive parents will be able to provide them proper education, relationship, care etc. The only thing needs to be taken care of is to ensure that the child gets into the right hands. This can be ensured by checking the adoptive family background, parents' maturity, marital relationship, attitude for adoption, financial stability etc. To ensure the welfare of the children, there needs to be uniform civil code for adoption.

I would conclude with a famous quote by Joyce Maquine Pavao- " Adoption is not about finding children for families, it is about finding families for children."

सिमरन कुमारी
सुपुत्री नवलेश प्रजापति,
निरीक्षक

राजु प्रजापति
सुपुत्र नवलेश प्रजापति

वृद्धावस्था की समस्याएं

नई चिकित्सा ने जहां लोगों की आकस्मिक मृत्यु को रोक दिया है, वहीं बढ़ते बुढ़ापे ने एक समस्या खड़ी कर दी है जो दिनोंदिन विकराल होती जा रही है. रिटायरमैंट के बाद कुछ साल तो निकल जाते हैं पर जैसे जैसे बच्चे, अगर हैं, अपनीअपनी गृहस्थी में व्यस्त होने लगते हैं, तो जिंदगी में एक खालीपन छाने लगता है और जीवन बेकार सा महसूस होने लगता है. संपत्ति होते हुए भी नकदी कम होने लगती है, बीमारियों पर खर्च बढ़ने लगता है. ये ऐसे तनाव हैं जिन के उदाहरण या नियम कम हैं. इन से कैसे निबटें, यह न बच्चे जानते हैं न पड़ोसी और न डाक्टर. ऊपर से इन वृद्धों को लूटने वाले चारों और बिखरे रहते हैं. कोई घर का नौकर बन कर आता है तो कोई बैंक मैनेजर.

अच्छे घरों और अच्छे पदों पर रहने वाले लोगों के लिए बुढ़ापा एक आफत बन कर आ रहा है, खासतौर पर जब दोनों में से एक साथ छोड़ जाए. अब समाज में ऐसा भी होने लगा है जब पतिपत्नी अपनेआप में इतने व्यस्त और संतुष्ट रहते हैं कि वे बच्चे चाहते ही नहीं हैं और पूरे तर्क सहित सोचविचार कर बच्चे न पैदा करने का निर्णय लेते हैं. 25-30 वर्ष की आयु में लिए गए इस निर्णय का असर 60-70 की आयु में दिखता है जब कोई उन की संपत्ति को लेने वाला नहीं बचता कि जो बदले में साधारण देखभाल भी प्यार समेत दे दे. हां, लूटने वाले बहुत आ जाते हैं. इन वृद्धों का हाल उन से ज्यादा बुरा नहीं है जिन के बच्चे विदेशों में जा कर बस गए हैं.

इस समस्या का हल वृद्धाश्रम से ज्यादा आसान एक ही घर में 4-5 वृद्धों का रहना होगा. बिल्डरों को ऐसे सुविधाजनक घर बनाने चाहिए जिन्हें वे केवल प्रौढ़ों और वृद्धों को बेचें और उन की बनावट ऐसी हो कि वृद्ध उन्हें खुद मैनेज कर लें और कमजोर होने पर भी उन्हें संभाल सकें. सरकारों से उम्मीद तो नहीं की जा सकती कि वे उन्हें सहायता देंगी पर वे कम से कम ऐसे मकानों, जो 70 साल से ऊपर वालों के हैं, करमुक्त, मुफ्त बिजलीपानी के कर दें ताकि बुजुर्गों को बिलों का भुगतान न करना पड़े.

दिनेश प्रजापत
निरीक्षक

सफर

सुमीत कुमार निरीक्षक

मैं, एक ऐसे सफर में निकल चुका हूँ, जहाँ बेचैनियाँ मेरा इंतजार करती है और तनहाइयाँ मेरे साथ-साथ चलती हैं।
मैं बढ़ता चला जा रहा हूँ,
रुको! ठहर जाओ! अरे अपने अवाज लगा रहे हैं।
मुलाकात जरूरी है, पर मैं बढ़ता चला जा रहा हूँ,
हाँ, जहाँ बेचैनियाँ मेरा इंतजार कर रही हैं और तनहाइयोँ ने अभी भी मेरा साथ नहीं छोड़ा है।
क्या सफर खत्म हो रहा है? क्या मंजिल दिख रही है? अरे नहीं यह तो मृगतृष्णा थी। खूबसूरत थी। सफर तो खत्म ही नहीं हो रहा। बढ़ता चला जा रहा है, हाँ, रास्तों के साथ-साथ।
डर है मुझे कहीं मंजिल ने मुझसे संबंध विच्छेद तो नहीं कर लिया, रास्ते मेरी प्रियतमा बनने को बताब हैं। नहीं नहीं ये झूठ है। मैं कदम बढ़ाता चला जा रहा हूँ उन्ही रास्तों पर,
हाँ, जहाँ बेचैनियाँ मेरा इंतजार कर रही हैं और तनहाइयोँ ने अभी भी मेरा साथ नहीं छोड़ा है।
इतना बेचैन होना क्या अच्छा है? नहीं बिलकुल नहीं। मैं देवों का मानस पुत्र हूँ। उम्मीदों की गोद में पला हूँ। यूँ हार मानना मेरी प्रकृति है ना नियती।
मैं, बढ़ता चला जाउँगा, अपनों से मिलने की उम्मीद में, आशाओं के चिराग की रोशनी में, चाहे कितनी भी जलन हो, तपन हो, चुभन हो, पर मैं बढ़ता चला जाऊँगा।
हाँ, जहाँ बेचैनियाँ मेरा इंतजार कर रही हैं और तनहाइयोँ ने अभी भी मेरा साथ नहीं छोड़ा है।

चिड़िया की सूझबूझ

देवेन्द्र सिंह सिकरवार, कनिष्ठ अनुवादक

चिड़िया ने शादी करते ही, वर से मांगा वर
पहले शौचालय बनवाओं, तभी बसेगा घर।
वर बोला जैसा चलता है, वैसा कुछ दिन और करो,
खुला पड़ा है इतना सारा, इसका ही उपयोग करो।
चिड़िया बोली अब न करूगी, इतना गंदा कर्म
अजी, खुले में शौच जात में, मुझको लगती शर्म।
हमने जो भी गलती की है, आगे नहीं करन दूंगी
पहले शौचालय बनवाओ, तब बच्चों को जनम दूंगी।

मोर

सिमरन कुमारी,
पुत्री नवलेश प्रजापति

देखो रंग विरंगे मोर आए
आसमान में भी बादल छाए
कैसे अपने पंखों को फैलाकर
अतिमनमहोक नाच दिखाए।
हम सबके मन को बहलाए
देखो रंग विरंगे मोर आए
आसमान में भी बादल छाए
उसके सर पर कलगी ऐसी
बादसाह के ताज के जैसी
भारत का राष्ट्रीय पक्षी कहलाए
देखो रंग विरंगे मोर आए
आसमान में भी बादल छाए।
हम सबको है नाज इन पे
आओ मिल कर हम इन्हें बचाएँ
वन उपवन हम कभी न काटें
ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं।
इन्हें से विलोपन से बचाएं।
देखो रंग विरंगे मोर आए
आसमान में भी बादल छाए।

स्वच्छ भारत अभियान

नवलेश प्रजापति,
निरीक्षक

नगर-नगर और गांव-गांव में, चर्चा है स्वच्छ भारत अभियान की
आओ बच्चो तुम्हे बताएं विधि स्वच्छता अभियान की
विकल्प पॉलिथीन की थैली का, कपड़ा और कागज की झोली,
लोगों में जागरूकता लाए, बंद करो पॉलिथीन की थैली।
आओ बच्चो तुम्हे बताएं विधि स्वच्छता अभियान की
खुद न फैलाओ कभी गंदगी, नहीं अन्य को फैलाने दें।
साफ सफाई रख कर हम सब, रोगों को ने फैलने दें।
कचरे का कर उचित प्रबंधन, उससे उत्पन्न करो उर्वरक
उत्पादन को अधिक बढ़ा कर, कुछ मदत करो किसान की
आओ बच्चो तुम्हे बताएं विधि स्वच्छता अभियान की।
घर-घर में शौचालय बनाओ, सभी को उसके लाभ बताओ।
तनिक गंदगी फैलन न पाए, ऐसी सोच हो हर इंसान की ।
आओ बच्चो तुम्हे बताएं विध स्वच्छता अभियान की
सपना हो साकार बापू का, भारत स्वच्छ बनाने का
पूरण हो उद्देश्य हमारा स्वच्छता दिवस मनाने का।
आज जरूरत आन पडी है, जागरूकता फैलाने की।
आओ बच्चो तुम्हे बताएं विध स्वच्छता अभियान की
"स्वच्छता ही सेवा है" लोगो को समझाना है।
समृद्धि का यही मंत्र है लोग को बतलाना है।
लहर चल रही, सभी ओर अब
मोदीजी के स्वच्छता के दो कदम अभियान की
आओ बच्चो तुम्हे बताएं विधि स्वच्छता अभियान की।
जय हिंद

तिருக்குரல திருக்குறள்

मु.गो. वेंकटकृष्णन, एम.ए. अवकाशप्राप्त हिन्दी प्राध्यापक, अलगप्पा कालेज, कारैक्कुडि ने तमिलनाडु के संत तिरुवल्लुवर विरचित तमिल भाषा के प्रसिद्ध ग्रंथा का दोहा छंद में अनुवाद किया है । तमिल मूल तथा नागरि लिपि में अनुवाद किए तिरुक्कुरल का अध्याय 2 नीचे प्रस्तुत है ।

अध्याय - 2

வான் சிறப்பு

வான்நின்று உலகம் வழங்கி வருதலால்
தான் அமிழ்தம் என்றுணரற் பாற்று

துப்பார்க்குத் துப்பாய துப்பாக்கித் துப்பார்க்குத்
துப்பாய தூஉம் மழை.

விணின்று பொய்ப்பின் விரிநீர் வியனுலகத்து
உள்நின்று உடற்றும் பசி.

ஏரின் உழா அர் உழவர் புயலென்னும்
வாரி வளங்குன்றிக் கால்.

கெடுப்பதூஉங் கெட்டார்க்குச் சார்வாய்மற் றாங்கே
எடுப்பதூஉம் எல்லாம் மழை

விசும்பின் துளிவீழின் அல்லால்மற் றாங்கே
பசும்புல் தலைகாண்பு அரிது.

நெடுங்கடலும் தன்நீர்மை குன்றும் தடிந்தெழிலி
தான்நல்கா தாகி விடின்.

சிறப்பொடு பூசனை செல்லாது வானம்
வறக்குமேல் வானோர்க்கும் ஈண்டு.

தானம் தவம்இரண்டும் தங்கா வியன்உலகம்
வானம் வழங்கா தெனின்.

நீர்இன்று அமையாது உலகெனின் யார்யார்க்கும்
வான்இன்று அமையாது ஒழுக்கு.

वर्षा महत्व

उचित समय की वृष्टि से जीवित है संसार।
मानी जाती है तभी, वृष्टि अमृत की धार।।

आहारी को अति रुचिर, अन्नरूप आहार।
वृष्टि सृष्टि कर फिर स्वयं, बनती है आहार।।

बादल-दल बरसे नहीं, यदि मौसम में चूक।
जलधि घिरे भूलोक में, क्षुति से हो अति चूक।।

कर्षक जन से खेत में, हल न चलाया जाय।
घन-वर्षा संपति की कम होती यदि आय।।

वर्षा है ही अति प्रबल, सब को कर बरबाद।
फिर दुखियों का साथ दे, करे वही आबाद।।

बिना हुए आकाश से, रिमझिम रिमझिम वृष्टि।
हरी भरी तृण नोक भी, आयेगी नहीं दृष्टि।।

घटा घटा कर जलधि को, यदि न करे फिर दान।
विस्तृत बड़े समुद्र का पानी उतरा जान।।

देवाराधन नित्य का उत्सव सहित अमंद।
वृष्टि न हो तो भूमि पर, हो जावेगा बंद।।

इस विस्तृत संसार में दान पुण्य तप कर्म।
यदि पानी वर्षे नहीं, टिके न दोनों कर्म।।

नीर बिना भूलोक का, ज्यों न चले व्यापार।
कभी किसी में नहीं टिके, वर्षा बिन आचार।।

विक्रम कुमार, अधीक्षक
सीमा शुल्क गृह, तूत्तुक्कुडि

रूबरू

ए मन ले चल मुझे अपने गाँव में,
मन को अपनेपन का अहसास होता है जिसकी ठंडी छाँव में।
इस कागज के टुकड़े को भुला कर, ऐसी व्यस्तता को ठेंगा दिखाकर ,
अपनी उस सोंधी सुगंध वाली मिट्टी की बाँहों में,
ए मन ले चल मुझे अपने गाँव में,
मन को अपनेपन का अहसास होता है जिसकी ठंडी छाँव में।
कुछ मजबूरियों के कारण, हम सब ने अपना घर छोड़ा है,
सुकून देने वाली उन हवाओँ से अपना मुँह मोड़ा है,
जिसकी प्यारी छाहों के विरह में न जाने ये मन कितनी बार रोया है।
ए मन ले चल मुझे अपने गाँव में,
मन को अपनेपन का अहसास होता है जिसकी ठंडी छाँव में।
अब बस तेरा ही सहारा है, तू ले चल वहाँ जो अपना गाँव सबसे न्यारा है।
सब कुछ भुला कर, उस सोंधी सुगंध की मिट्टी में अहसास जिसका प्यारा है।
जिसकी विरह की अग्नि में अब टूट सा गया हूँ,
ए मन ले चल मुझे अपने गाँव में,
मन को अपनेपन का अहसास होता है जिसकी ठंडी छाँव में।
वह धरती माँ अब पुकार रही है,
अपनी बाहें फैलाए पुचकार रही है,
अपने प्यार में डुबोने को,
अपनी ममता में भिगोने को ,
ए मन ले चल मुझे अपने गाँव में,
मन को अपनेपन का अहसास होता है जिसकी ठंडी छाँव में।

IRONICAL SYNDROMES IN PSYCHOLOGY

G. VENKATASUBRAMANIAN,
SUPERINTENDENT, HQRS., TRICHY

HUBRIS SYNDROME:

A Condition where the behavior of politicians, business leaders and other people in power changes for the worse as they come to enjoy increasing power and influence. The syndrome causes certain changes to the brains of theSe powerful people, which in turn makes them suffer from a number of undesirable qualities: including losing touch with reality, taking excessive pride in their actions, displaying lesser empathy towards other people and taking arrogant decisions or actions without sufficient thoughts.

COURTESY BIAS:

This refers to the tendency among people to be courteous to these who seek their opinion.

This prevents the tree expression of any honest feedback that could be perceived as negative feedback by the recipient.

Employees of a concern, for instance, might feel hesitant to express their honest opinion about the concern's new product to their boss for the fear of offending him.

While the courtesy bias can save people form uneasy situations in the short term, it can also hinder the exchange of constructive feedback that can help improve matters.

Some organisations resort to anonymous feedback mechanisms to overcome the problem.

PECULIAR CHARACTERS IN GREEK MYTHOLOGY

CERBERUS:

Cerberus was the three headed dog that guarded the entrance to Hades – the place that the spirits of the dead went to. If a living individual tried to enter the underworld, Cerberus stopped them. Sometimes people gained entrance to Hades by throwing a sop to the dog. Very often the sop was nothing more than a bag of honey cakes.

CASSANDRA:

Cassandra was a Trojan princess. She was the sister of Paris, the man who fell in love with the beautiful Helen. Apollo, the god of sun and light, falls in love with Cassandra, and as a token of his love gives her the gift of seeing into the future. Unfortunately for Apollo, Cassandra has no interest in him. So the angry Apollo puts a curse on her. Although she will be able to see into the future, no one will believe whatever predictions she makes. So much so, when she predicts that Helen's arrival will bring about the destruction of Troy, no one believes her. When she pleads with Priam, the king of Troy, not to drag the giant wooden horse left behind by the Greeks, into the city of Troy, he ignores her warning. Nowadays, the name is used in everyday contexts to mean someone whose constant warnings go un-headed.

CORNUCOPIA:

When "Zeus", the king of gods, was a child, he was taken care of by a goat named Amalthea. One day, while he was playing with the goat, Zeus accidently broke off one of her horns. From this horn came an unending supply of food. Traditional paintings of "Cornucopia" show a horn with lots of fruits and nuts next to it.

''வன பிரம்மா''

க. வெங்கடசுப்ரமணியன்
கண்காணிப்பாளர்

2012 ஆம் ஆண்டில் டெல்லி ஜவஹர்லால் நேரு பல்கலைக்கழகம் திரு. ஜாதவ் பேயெங் என்பவருக்கு "Forest Man of India" என்ற சிறப்புப் பட்டத்தை வழங்கியது. அதற்கு என்ன காரணம் என்று பார்ப்போமா?

இயற்கையை நேசிப்பாகவும், சுவாசிப்பாகவும் கொண்ட பழங்குடி இனத்தில் தோன்றியவர் திரு. ஜாதவ் பேயெங். அவர் சார்ந்த ''மிஸிங்'' இனம் அசாமின் இரண்டாவது பெரிய பழங்குடி இனம்.

1979ல் பிரம்மபுத்ராவில் ஏற்பட்ட வெள்ளம் ஏராளமான வனவிலங்குகளைப் பாதித்தது. காடுகள் மண் அரிப்பைத் தடுத்து உயிரினங்களைக் காக்கும். மற்றும் உலகில் எல்லா மரங்களும் அழிந்து விட்டால் ஒருநாள் மனிதர்கள் முழுமையாக அழிந்து விடுவார்கள் என்றறிந்த ஜாதவ். அன்றிலிருந்து அவருக்குக் கிடைத்த விதைகள் மரக்கன்றுகள் இவற்றுடன் மஜூலி தீவுகளின் ஒன்றான மிகப்பெரிய மணற் தீவில் மரவளர்ப்பு முயற்சியில் ஈடுபட்டார்.

அவருக்கு சிறுவயதிலிருந்தே அறிமுக மான அசாம் வேளாண்மைப் பல்கலைக்கழக பேராசிரியர் திரு. ஜாதுநாத் போர் பருவா என்பவர் ஆலோசனைப்படி மண்புழுவைப் போல மண்ணை வளப்படுத்தும் தன்மை சிவப்பு கட்டெறும்புகளுக்கும் உண்டு என அறிந்து நூற்றுக்கணக்கில் எறும்புகளை தீவுக்கு கொண்டு சென்றார். அவை சுரந்த நொதிகளால் மண்வளம் கொண்டது. செடிகள் வேர் கொண்டது.

ஜூலையில் மழை தொடங்கும் என்பதால் அவர் ஏப்ரல், மே மாதங்களிலே கன்றுகளை நட்டு அதன் அருகே மூங்கில் கம்புகளை ஊன்றி அதில் பானையை கட்டி, நீர் நிரப்பி, பானை நீர் சொட்டுவது போல சிறு துளையிட்டு 'சொட்டு நீர் பாசனம்' என்பதை அறியாமலே அதைச் செய்து வந்துள்ளார்.

அவரது கால்நடைகளின் சாணத்தை துளிக்கூட வீணாக்காமல் தீவில் உள்ள செடிகளுக்கு உரமாக்கி உள்ளார். இவ்வாறு செடி வளர வளர மரங்களாக மாறி உயர உயர பறவைகள் அத்தீவுக்கு வர ஆரம்பித்துள்ளன. அவற்றின் எச்சங்களாலும் அவை சாப்பிட்ட மிச்சங்களாலும் விதைகள் தீவெங்கும் பரவி சிறிது காலத்தில் முயல்களும் மான்களும் தீவில் துள்ள தொடங்கியுள்ளன.

தொடர்ந்து வெண் மணற் பரப்பான தீவு பசுமை நிற காடாய் மாற குரங்குகள், காட்டு பன்றிகள், காட்டெருமைகள், காண்டா மிருகங்கள், பல்வகையான பறவைகள், பாம்பினங்கள் என பல்கி பெருகி விட்டன. இவற்றில் பெரும்பாலானவை இத்தீவின் 100 கி.மீ தொலைவிலுள்ள காஸிரங்கா தேசியப் பூங்காவில் இருந்து இடம் பெயர்ந்தவை.

மான்களும், காட்டெருமைகளும் இருக்கும் காட்டை நோக்கி புலிகளும் வந்தன வங்கப்புலிகள் தொடர்ந்து யானைகளும் வர காடு முழுமை அடைந்ததாக ஜாதவ் நம்பினார். ஏனென்றால் இயற்கையின் உணவுச்சங்கிலி அப்போதுதானே முழுமை பெறும்.

இவ்வாறு ஜாதவ் 35 ஆண்டுகளாக உருவாக்கிய காட்டின் பரப்பளவு சுமார் 1,360 ஏக்கர். இதை 2008ம் ஆண்டு அறிந்த ''ஜிட்டு கலிட்டா'' எனும் வனவிலங்கு ஆர்வலர் அந்த பகுதி மக்களிடம் விசாரித்த போது அவர்கள் அந்த காட்டை ஜாதவின் செல்லப் பெயரான ''மொலாய்'' என்பதைக் கொண்டு ''மொலாய் காடுகள்'' என அழைப்பதைப் புரிந்து கொண்டார்.

இதை கட்டுரையாக ஜிட்டு அசாமிய தினசரியில் கொடுக்க அவர்கள் ஒருவழியாக எட்டு மாதங்கள் கழித்து பிரசுரித்தனர். பின் டைம்ஸ் ஆப் இந்தியாவில் வெளிவந்தது.

இதற்காக 2012ஆம் ஆண்டு அப்துல்கலாம் ஒருவிழாவில் ஜாதவுக்கு பரிசு அளித்தார். 2015ஆம் ஆண்டு மத்திய அரசு ஜாதவுக்கு ''பத்மஸ்ரீ'' பட்டம் வழங்கியது. கௌஹாத்தி பல்கலைக்கழகம் கௌரவ டாக்டர் பட்டம் வழங்கியது. 2012 செப்டம்பரில் பிரான்சில் நடந்த உலக வெப்பமயமாதல் குறித்த சர்வதேச மாநாட்டில் இந்தியா சார்பாக ஜாதவ் கலந்து கொண்டு தன் கருத்துக்களைப் பதிவு செய்துள்ளார். இப்போது தன் அடுத்த திட்டத்துடன் தீவின் இன்னொரு பகுதியில் புதிய காட்டை உருவாக்கிக் கொண்டிருக்கிறார் ஜாதவ். ஜாதவ் உருவாக்கிய காட்டில் ஒரு சிங்கம் கூட இல்லையே என்கிறீர்களா?

அங்கதான் "Single"லா ஒரு சிங்கம் இருக்குதே? ஆம் ''ஜாதவ்பேயேங்''தான் அந்த சிங்கம்.

நேதாஜி சுபாஷ் சந்திரபோஸ்
யுக புருஷர்

வி. சுவாமிநாதன்,
கண்காணிப்பாளர்

23-1-1897 அன்று கட்டக் நகரில் சுபாஷ் சந்திரபோஸ் பிறந்தார். அவரின் தந்தை ஜானகிராம் போஸ் பிரபல வழக்கறிஞராகவும், செல்வந்தாராகவும் இருந்தார். போஸ் கூடப் பிறந்தவர்கள் 13 பேர். பெரிய குடும்பம். வீட்டில் வேலை செய்யும் பணியாளர்களும் அதிகம். பெரிய குடும்பமாக இருந்ததால் போஸின் மீது தனிக் கவனம் செலுத்த இயலவில்லை.

2. வாழ்வின் தொடக்கமே போஸிற்கு போராட்டமாகத்தான் தொடங்கியது. 5 வயதில் பள்ளி செல்ல வண்டியில் ஏறிய போது தலைக்குப்புற விழுந்து காயமடைந்தார். பள்ளி செல்லும் முதல் நாளிலேயே சோதனை . பின்னர் அவர் வாழ்நாள் முழுவதும் போராட்டமாகவே அமைந்தது.

3. சிறுவயதில் தனிமை விரும்பியாகவே இருந்தார். படிப்பில் படு சுட்டியாக விளங்கினார். சிறந்த ஆங்கில பள்ளியில் படித்ததால் ஆங்கிலத்தில் மிகத் திறமைசாலியாக இருந்தார்.

4. கல்கத்தா மாநிலக் கல்லூரியில் B.A. Philosophy படித்தார். கல்லூரி நாட்களில் ஓட்டன் என்ற ஆசிரியர் மிகுந்த இனவெறியராக இருந்தார். இந்தியர்களை கேவலமாக பேசியதால் வெகுண்டெழுந்த போஸ் அவரை தாக்கினார். சிறுமை கண்டு பொங்கும் இயல்பு இளம் வயதிலேயே இருந்தது.

5. அக்காலத்தில் எல்லா இளைஞர்களுக்கும் ICS தேர்வு எழுதி ஜில்லா கலெக்டராக ஆசை. பெற்றோரும் அந்த ஆசையில் இருந்ததால் இங்கிலாந்து சென்று ICS தேர்வு எழுதி வெற்றியும் பெற்றார். ஆனால் அடிமை இந்தியாவில் வெள்ளையர் கீழ் பணி செய்ய வேண்டுமே என்ற வெறுப்பில் ICS பணியை தூக்கி எறிந்து பம்பாய் திரும்பினார்.

6. பம்பாயில் காந்தியைச் சந்தித்தார். தேசப்பணிக்காக ICS பணியை துறந்த போஸைக் கண்டு மனம் வியந்தார் மகாத்மா. பின்னர் தேசப்பணியாற்ற சித்தரஞ்சன்தாஸ் என்ற தலைவரை கல்கத்தாவில் சந்தித்து சேர்ந்து பணியாற்றுமாறு போஸிற்கு காந்தி வழிகாட்டினார்.

7. சித்தரஞ்சன்தாஸ் துடிப்பான போராளி. சோஷலிஸ சிந்தனை கொண்டவர். இருவரின் இலக்கும் துடிப்பான போராட்ட வழியாகவே இருந்தது. இருவரும் மோதிலால் நேரு தொடங்கிய ஸ்வராஜ்ய கட்சியில் சேர்ந்தனர்.

8. போஸின் துடிப்பான அரசியல் பல காங்கிரஸ் தொண்டர்களை ஈர்த்தது. 1938ஆம் ஆண்டு பெரும்பாலோர் ஆதரவில் போஸ் காங்கிரஸ் தலைவர் ஆனார். மீண்டும் 1939ஆம் ஆண்டு பெரும்பாலோர் ஆதரவில் போஸ் காங்கிரஸ் தலைவராக தேர்தெடுக்கப் பட்டார். காங்கிரஸின் மிதவாத நிலையைக் கண்டு வெறுத்து போஸ் காங்கிரஸிலிருந்து வெளியேறினார்.

9. தீவிரமான போராட்டமே இந்தியா விற்கு சுதந்திரம் கிடைக்க உதவும் என்று போஸ் நம்பினார். சுதந்திர போராட்டத்தை வலுவாக்க அயல்நாடுகளின் உதவியைப் போஸ் நாடத் தயங்கவில்லை.

10. இரண்டாம் உலகப்போர் 1939ஆம் ஆண்டு தொடங்கியது. ஜெர்மனி, இத்தாலி, ஜப்பான் போன்ற நாடுகள் கூட்டாக பிரிட்டன், பிரான்ஸ், அமெரிக்கா போன்ற நாடுகள் மீது போர் தொடுத்தன. இந்த சந்தர்ப்பத்தை போஸ் தேச விடுதலைக்கு பயன்படுத்த ஜெர்மனி சென்று ஹிட்லர் பதவியை நாடினார். 1941 அன்று ஜெர்மன் ரேடியோவில் போஸ் ஆற்றிய உரை பிரிட்டிஷ் ஏகாதிபத்தியத்தை கலங்கடித்தது.

11. பின் ஜெர்மனியிலிருந்து கடல்வழியாக, மற்றும் கப்பல் வழியாகவும் நீர்மூழ்கிக் கப்பல் வழியாகவும் ஜப்பான் சென்றடைந்தார். ஜப்பான் உதவியுடன் 40,000 கொண்ட படையுடன் இந்திய தேசிய

இராணுவத்தை சிங்கப்பூரில் உருவாக்கினார். ஆயுத போராட்டம் மூலம் இந்தியாவிற்கு விரைவில் சுதந்திரம் வாங்க முடியும் என்று நம்பினார்.

12. தென் தமிழகத்தில் முத்துராமலிங்கத் தேவர் என்ற தலைவரின் அறைகூவலால் பல்லாயிரம் இளைஞர்கள் இந்திய தேசிய ராணுவத்தில் சேர்ந்தனர். Dr. லட்சுமி போன்றவர்கள் இந்திய தேசிய ராணுவத்தில் பெண்கள் பிரிவில் சேர்ந்தனர்.

13. இந்திய தேசிய ராணுவம் பிரிட்டிஷாருக்கு சிம்ம சொப்பமனமாக இருந்தது. நேதாஜி முதலில் அந்தமான் தீவுகளைக் கைப்பற்றினார். படையினர் 'ஜெய் ஹிந்த்' இன்குலாப் ஜிந்தாபாத் என்ற கோஷங்கள் இட்டபடி ஆர்ப்பரித்தனர். மலேஷியா, பர்மா என்ற நாடுகளைக் கைப்பற்றி வெற்றியை நோக்கியபடி சென்றன. நேதாஜியின் இராணுவம் சிறந்த கட்டுக்கோப்பான படையாக விளங்கியது.

14. ஆயுதங்களுக்கும் போர்த்த வாடங்களுக்கும் ஜப்பானை நம்ப வேண் இருந்தது. ஜப்பான் 1945 ஆண் ஆண்டு போரி தோற்கடிக்கப்பட்டதால் நேதாஜியி இராணுவம் போர்த் தளவாடங்கள் இன் தவித்தது. பின்னர் பலம் கொண்ட பிரிட்டி ராணுவம் முன்பு நேதாஜியின் படை தாக்கு பிடிக்க முடியவில்லை. மீண்டும் ஆயுதமு பலமும் திரட்ட ஜப்பான் செல்ல நேதா திட்டமிட்டார். விமானத்தில் செல்லும் போ தைவான் நாட்டில் தரை இறங்கும் போ ஏற்பட்ட விபத்தில் தீக்காயங்களால் 18-8-19 அன்று வீரமரணம் அடைந்தார். அவரின் அஸ் ஜப்பானில் உள்ள ரெங்கோஜி ஆலயத்தி இன்றும் பாதுகாப்பாக வைக்கப்பட்டுள்ளது.

15. தேச விடுதலைக்காக அவர் தொடர்ந் போராட்டம் மகத்தானது. பாரத தேசம் அ செய்த தியாகத்திற்கு என்றென்று கடமைப்பட்டிருக்கிறது. நேதாஜிக்கு எனது வணக்கங்கள். '' ஜெய் ஹிந்த்''.

மயில் முறைக் குலத்துரிமை

க. வெங்கடசுப்ரமணியன்
கண்காணிப்பாளர்

மயில் முறைக் குலத்துரிமை என்று மந்தரை சூழ்ச்சிப் படலத்தில் கம்பர் பாடியதற்கு பலவித விளக்கங்கள் உள்ளன. ''ஸயன்டிபிக் அமெரிக்கன்'' (Scientific American) என்ற பத்திரிக்கையில் வந்த விளக்கம் பின் வருமாறு உள்ளது. மயிலானது தன்னுடைய எல்லாக் குஞ்சுகளுடனும் குடும்ப சகிதமாகத்தான் ஓர் இடத்திலிருந்து இன்னோர் இடம் போகும். அப்படி மயில் குஞ்சுகளுடன் சேர்ந்திருக்கும் போது குஞ்சுகளில் மூத்ததுதான் தோகை விரித்து ஆடத் தொடங்கும். அதன் பிறகே மற்ற குஞ்சுகள் தோகை விரிக்கும்.

இதைக் கண்டு பிடிக்க மயில் குஞ்சு பொரித்தவுடன் ஒவ்வொரு மயில் குஞ்சுக்கும் வேறு வேறு வண்ணத்தில் வளையங்கள் மாட்டி விடப்பட்டு அதிலிருந்தே மூத்த மயில் குஞ்சு அடையாளம் அறியப்பட்டது அதன் மூலம் எப்போதும் மயிலின் மூத்த குஞ்சே முதலில் தோகை விரித்து ஆடுவது கண்டறியப்பட்டது.

மயிலிடம் உள்ள இந்தத் தனி தன்மையைத்தான் கம்பர் தன் இராமாயணத்தில் கையாண்டு இராமனுக்கே பட்டம். இராமனே ஆள வேண்டும் என கைகேயி மனமாற்றம் ஏற்படும் முன் கூனிக்கு உணர்த்தும் பாடலில் மிக அழகாக மயில் முறைக் குலத்துரிமையை அக்காலத் திலேயே பாடியிருக்கிறார்.

நாலடியார் ஒரு பார்வை

D.சங்கர்,
கண்காணிப்பாளர்

தமிழின் தொன்மையான நூல்களுள் ஒன்றாக நாலடியய் விளங்குகிறது. பதினென்கீழ்க்கணக்கு நூல்களுள் ஒன்றாக நாலடியார் திருக்குறளுக்கு இணையாக கருதப்படுகிறது. ஒவ்வொரு பாடலும் நான்கு அடிகளை உடையதாக விளங்குகிறது. சமண முனிவர் பலர் இப்பாடல்களை பாடியுள்ளனர். இப்பாடல்களை தொகுத்தவர் பதுமனார் ஆவார். நேரிசை வெண்பாகவும், இன்னிசை வெண்பாகவும் இப்பாடல்கள் அமைந்துள்ளன.

பாடல்களின் எண்ணிக்கை

கடவுள் வாழ்த்து

அறத்துப்பால் 1-13 அதிகாரங்கள் 130

பொருட்பால் 26 அதிகாரங்கள் 260

காமத்துப்பால் 1 அதிகாரம் 10

மொத்தம் 40 அதிகாரங்கள் 400 பாடல்கள்

இப்பாடல்கள் சங்கம் மருவிய காலம் கி.பி. 250-ஐ ஒட்டிய காலம் என்று கூறப்படுகிறது.

அறம் சார் கருத்துக்களை எளிய முறையில் எடுத்தியம்புவதில் நாலடியார் பிரதான இடம் பெறுகிறது. பெரும்பாலும் திருக்குறள் சார்ந்த நெறிகளே இப்பாடல்களிலும் கூறப்பட்டுள்ளன. துறவு, பொறையுடமை, ஈகை, கல்வி, பெரியாரைப் பிழையாமை, நட்பாராய்தல், இரவச்சம், பேதமை, கயமை என இரண்டுக்கும் பொதுவான அதிகாரங்கள் பலவுண்டு.

''கல்வி கரையில, கற்பவர் நாள்சில,
மெல்ல நினைக்கின் பிணிபல - தெள்ளிதின்
ஆராய்ந்தமைவுடைய கற்பவே நீரெழியப்
பாலுண் குருகின் தெரிந்து''

பாடல் 135

இதன் பொருள். கற்க வேண்டிய நூல்கள் எண்ணற்றவை. கற்கும் மக்களின் வாழ்நாளோ குறைவானவை. மேலும் இடைக்காலத்தில் பல நோய்களும், உடலை ஆட்டிப் படைக்கலாம். எனவே சிந்தித்து பயனுள்ள நூல்களே தேர்வு செய்து கற்கவேண்டும். அன்னப்பறவை நீரை விடுவித்து பாலை மட்டுமே அருந்துவதைப் போல அமைய வேண்டும்.

மேன்மக்கள் எனும் அதிகாரத்தில் 6வது பாடலாக கீழ்க்கண்ட பாடல் அமைந்துள்ளது.

கடித்துக் கரும்பினை கண்தகர நூறி
இடித்து நீர் கொள்ளினும்
இன் சுவைத்தே யாரும்
வடுப்பட வைதிறந்தக் கண்ணுங்
..... குடிப்பிறந்தார்.

எவ்வளவு கசக்கிப் பிழிந்தாலும் கரும்பு இனிப்பாகவே இருக்கும். அதுபோல தம்மைப் பிறர் எவ்வளவு துன்புறுத்தினாலும் பெரியோர் தம் நிலையிலிருந்து வழுவாமல் நன்மையே செய்வர் என்பதே இதன் பொருள்.

இன்னா செய்தார்க்கும் இனியவே செய்யாக்கால்
என்ன பயத்ததோ சால்பு

என்ற குறளுடனும் மேற்கண்ட பாடலை ஒப்பிட்டுப் பார்க்கலாம்.

அறம், பொருள், இன்பம், வீடுபேறு என்ற

நான்கு பிரிவுகளாக மனித வாழ்க்கையை வகைப்படுத்தலாம். இந்த நான்கு நிலைகள் குறித்தும் பல்வேறு செய்திகளை நமக்களிக்கிறது நாலடியார். கல்வி, ஒழுக்கம், மானம், கற்பு, நட்பு, என பல்வேறு வாழ்வியல் நெறிகளை சுட்டிக்காட்டுகிறது நாலடியார்.

இல்லம் இளமை எழில்வனப்பு மீக்கூற்றம்
செல்வம் வலிஎன் றிவையல்லாம் மெல்ல
நிலையாமை கண்டு நெடியார் துறப்பர்
தலையாயர் தாம் உய்யக் கொண்டு.

பெரியோர் தமது இல்வாழ்க்கை, இளமைப்பருவம், எழுச்சி, அழகு, பெருமை, செல்வம், ஆற்றல் இவையெல்லாம் நிலையற்றவை என்பதை உணர்ந்தேயிருப்பார். இவற்றின் மீது பற்று வைக்காமல் தன் ஆன்மா உய்ய வழிதேடுவார், இதையே வள்ளுவரும்

அற்றவர் என்பார் அவாஅற்றார் மற்றையார்
அற்றாக அற்றதுஇலர் என்கிறார்.

நச்சுப் படாதவன் செல்வம் நடுஊருள்
நச்சுமரம் பழுத்தற்று என்பார் வள்ளுவர்

வறியவர்க்கு உதவாதவனுடைய செல்வம் ஊரின் நடுவில் உள்ள மரத்தில் நச்சுப்பழம் உள்ளதைப் போன்றதேயாகும் என்பதே இதன் கருத்து.

அருகல தாகிப் பலபழுத்தக் கண்ணும்
பெரிதாள் விளவினை வாவல் குறிகா
பெரிதண்ணராய்னும் பீடிலார் செல்வம்
கருதிங் கடப்பாட்ட தன்று
என்கிறது நாலடியார்.

விளாமரத்தில் அடிப்பகுதி பெருத்தும், கம்பீரமாகவும் இருப்பினும் அவற்றில் பல பழங்கள் இருப்பினும் வெளவால்கள் அங்கு செல்லா. ஏனென்றால் அப்பழங்களில் முள் நிறைந்திருக்கும். அதுபோல நற்பண்புகள் அற்ற செல்வந்தரிடம் பிறர் அணுகார். அவர் பெற்ற செல்வத்தினால் யாருக்கும் பயனில்லை.

இவ்வாறு நாலடியாருக்கும் திருக்குறளுக்கும் பல கருத்தொற்றுமைகளை நாம காண முடியும்.

வேத நூல்களுக்கு இணையாக நாலடியாரை காண்போர் ஆன்றோர் வெள்ளாண் மரபுக்கு வேதம் எனச் சான்றோர் எல்லாரும் கூடி எடுத்துரைத்த சொல் ஆய்ந்த நாலடி நானூறு நன்(கு) இனிதா என் மனத்தே சீலமுடன் நிற்க தெளிந்து என்கிறது ஒரு பாடல்.

ஆலும் வேலும் பல்லுக்கு உறுதி நாலும்
இரண்டும் சொல்லுக்கு உறுதி
என்பது முதுமொழி.

நாலடியார் தமிழின் மிக உயர்ந்த நூல்களுள் ஒன்று என உறுதிபடச் சொல்லலாம். அறநூலாக மட்டுமின்றி செம்மையான கருத்துக்களை சுவைபட உவமைகள் மூலம் எடுத்தியம்பும் இலக்கிய நூலாகவும் நாலடியார் விளங்குவது அதன் தனிச்சிறப்பு. வேளாண் வேதம் என்ற பெருமையும் இதற்கு உண்டு. தமிழறிஞர் ஜி.யு போப் அவர்களால் நாலடியார் ஆங்கிலத்தில் மொழி பெயர்க்கப்பட்டுள்ளது. அனைவரும் படித்துப் பாதுகாக்க வேண்டிய ஒரு பொக்கிஷமாக நாலடியார் திகழ்கிறது.

सुकून

सतवीर, कर सहायक,
सीमा शुल्क गृह तूत्तुक्कु

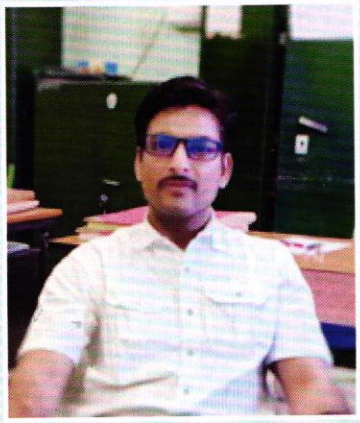

चल ए-यार शहर से दूर चलें, जहाँ सुकून हमें भरपूर मिले।
ना शहर मिले ना गाँव मिले, बस ठण्डी ठण्डी छाँव मिले।।
हरी भरी हरियाली मिले और फूलों से झुकी हर डाली मिले।
बहती नदिया की धारा मिले, पास में कोई झरना प्यारा मिले।।
चल ए-यार शहर से दूर चलें, जहाँ सुकून हमें भरपूर मिले।

न धुआँ दिखे न धूल उड़े, चारों तरफ खिलते फूल मिलें।
शहरों जैसा जहाँ शोर न हो, अमन चैन हर ओर मिले।।
ना बहुत घनी आबादी मिले, नदी पहाड़ और वादी मिले।
चल ए-यार शहर से दूर चलें, जहाँ सुकून हमें भरपूर मिले।

ऐसा एक बसेरा मिले, जहाँ पंछी चहकें तो सवेरा खिले।
प्रेम का दीपक जलता रहे, ना ईर्ष्या द्वेष का अंधेरा मिले।।
हर किसी से अपनापन मिले, ना कोई अजनबी चेहरा मिले।
चल ए-यार शहर से दूर चलें, जहाँ सुकून हमें भरपूर मिले।

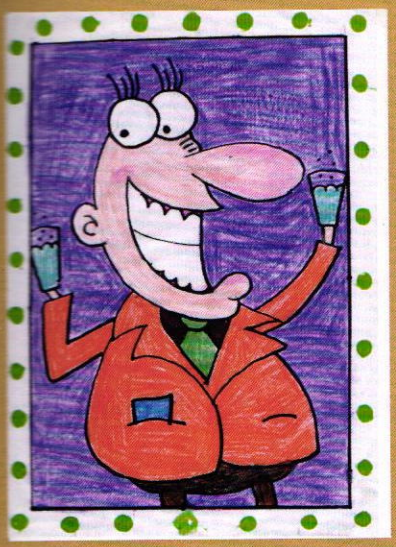

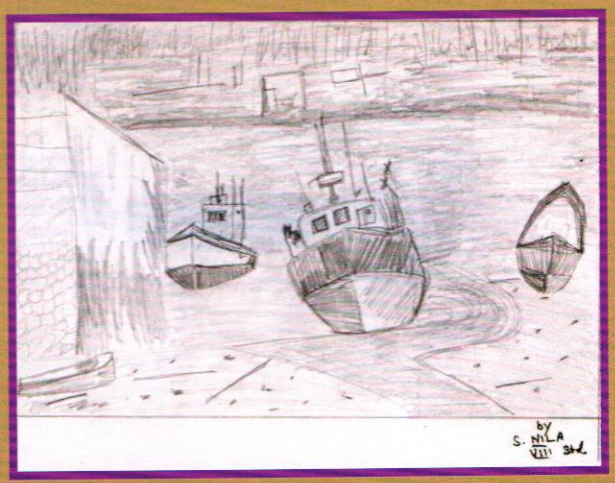

एस.निला
सुपुत्री,
वी. शिवकुमार, अपर आयुक्त

प्लास्टिक पर प्रतिबंध

(हिन्दी पखवाड़ा, 2018 के दौरान आयोजित हिन्दी निबंध प्रतियोगिगता में प्रथम पुरस्कार से अलंकृत लेख)

शेखर कुमार
(आशुलिपिक)

मानव अपने जीवन को सुगम्य और आरामदायक बनाने हेतु पहले तो संसाधन जुटाता है, फिर उसके नफा और नुकसान का विश्लेषण करता है और अंत में उसके नकारात्मक पहलू से निपटने के लिए अभियान चलाता है। प्लास्टिक इसी प्रकार के संसाधन का एक उदाहरण है। इसके आविष्कार के पश्चात मानव जगत में एक क्रांति सी आ गई, क्योंकि यह सस्ता प्रयोग में आसान एवं हल्का और टिकाऊ होता है। किंतु हर चमकने वाली चीज सोना नहीं होती है। दिखने में तो नमक भी चीनी सा प्रतीत होता है। प्लास्टिक का सबसे नकारात्मक पहलू यह है कि यह मृदा में अपघटित नहीं होता है। मलबे में दबने से मृदा के प्रदूषित होने के साथ-साथ मिट्टी की उर्वरा शक्ति कम हो जाती है। जालाने से हानिकारक गैसें निकलती हैं। अगर कोई जीव-जंतु इसको निगल जाए तो उसकी असमय मौत हो जाती है। इतना ही नहीं पिछले एक दशक में जितना कचरा बह कर जल-स्रोतों में मिल गया है यदि उस पर नियंत्रण नहीं किया गया तो आने वाले तीन दशकों में यानी 2050 तक समुद्र में मछलियाँ कम और प्लास्टिक ज्यादा नजर आएगा। अतः इन सब चुनौतियों से निपटने हेतु "प्लास्टिक पर प्रतिबंध" वर्तमान समय की सबसे बड़ी मांग है। अब हम सबको एक ही नारा लगाना है।

पॉलिबैग को कभी न समझो दोस्ट

प्लास्टिक है शहर की गंदगी का प्रमुख स्रोत।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी इस समस्या को गंभीरता से लिया है तथा इस वर्ष के पर्यावरण दिवस (05 जून 2018) का विषय "बिट प्लास्टिक पॉलूशन" चुना था जिसकी मेजबानी भारत को सौंपी गई थी।

सुझाव –

क) "एकल प्रयोग प्लास्टिक" पर पूर्ण प्रतिबंध।

जब चुनौती बड़ी हो तो कुछ ठोस कदम उठाए जाने आवश्यक हो जाते है। एकल प्रयोग प्लास्टिक यानी जो प्लास्टिक एक बार प्रयोग में ला कर फेंक दिया जाता है। यह सोचे बगैर कि इससे रोजगार कम होगा या किसी प्रकार का नुकसान होगा ऐसी प्लास्टिक के निर्माण पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध कर दिया जाना चाहिए क्योंकि एकल प्रयोग प्लास्टिक सबसे बड़ी चुनौती के रूप में सामने आ रही है। मानव के पास ह की कमी नहीं है। यदि इसे सख्ती से लागू किया जाए जरूर वह एकल प्रयोग प्लास्टिक का विकल्प ढूढ साथ ही कपड़े, जूट आदि से बने थैलों को लोकप्रि मिलेगी। दूसरी बात है कि ऐसे रोजगार का क्या फा जो मानव जगत के सतत विकास के लिए खतरा है।

ख) पुनर्चक्रण

पुनर्चक्रण को बड़े स्तर पर लागू करने हेतु प्लास्टि कचरा से प्लास्टिक चुनने वाले मजदूरों को उसका उ मूल्य दिए जाने के साथ-साथ प्रोत्साहित भी किया चाहिए।

ऐसी कंपनियाँ जो बड़े स्तर पर प्लास्टिक का प्र करती है उनको ऐसी व्यवस्था बनानी चाहिए कि ब प्लास्टिक पुनर्चक्रण के लिए उनके पास वापस जाए। इसके लिए वे ग्राहकों को उपहार का प्रलोभ सकते हैं।

ग) बेकार प्लास्टिक का समुचित निस्तारण

पुनर्चक्रण प्लास्टिक निस्तारण का स्थायी उपाय न क्योंकि तीन से चार वार पुनर्चक्रण के पश्चात प्लाि पूर्णरूस से बेकार हो जाती है जिसे फेंकना ही पड़त ऐसे प्लास्टिक के समुचित निस्तारण हेतु प्लास्टि बजली उत्पन्न करने की तकनीक विकसित हो चु इस प्रकार के तकनीक का बढ़ावा दिया जाना चाहिए भारत में भी लाई जानी चाहिए। इसके अलावा प्लास्टिक का प्रयोग रोड का लेयर बनाने के लि किया जा सकता है।

घ) बच्चों के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना।

बच्चे किसी भी अभियान को सफल बनाने में काफी अहम योगदान दे सकते हैं। उन्हें प्लास्टिक के कुप्रभाव से अवगत कराया जाना चाहिए ताकि वे अपने घर और अगल-बगल प्लास्टिक के प्रयोग का विरोध विरोध कर सकें। हमने बच्चों द्वारा स्वच्छता मिशन अभियान में अपना योग दान देने की खबर कई बार अखबारों में पढ़ी है।

ङ) हमारा योगदान

प्लास्टि प्रतिबंध अभियान को सफल बनाने हेतु, एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते हम व्यक्तिगत रूप से निम्नलिखित प्रभावी योगदान दे सकते हैं-

च) आदतों पर रोक

एक पुरानी कहावत "हम बदलेंगे युग बदलेगा" के अनुसार हमें अपनी गलत आदतों को बदलना अधिक आवश्यक है। अतः हम संकल्प लें कि हम अपने घर में प्लास्टिक का प्रयोग नहीं करेंगे। दृण संकल्प से बदलाव अवश्य नजर आएगा। जो लोग कहते हैं कि "बिना प्लास्टिक के जीवन-यापन संभव नहीं है" उनका भी नजरिया बदल जाएगा।

छ) जागरूकता

भारत में अधिकांशतः लोग प्लास्टिक के दुष्प्रभाव से अवगत नही हैं। इसका प्रयोग धीमे जहर के प्रयोग की तरह हानिकारक है। समाज, देश और दुनियाँ में जागरूकता फैलने मात्र से समस्या का आधा समाधान हो जाएगा और अधिकांश लोग कंधे से कधा मिलाकर हमारे साथ इस अभियान में शामिल हो जाएंगे।

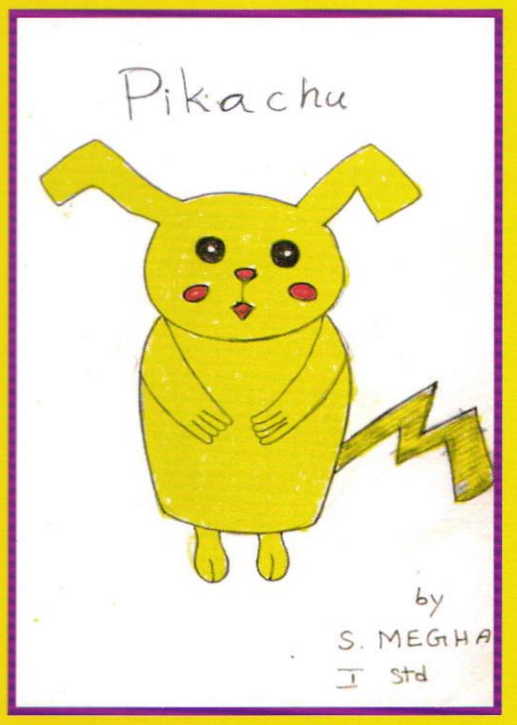

एस. मेघा
सुपुत्री, वी. शिवकुमार,
अपर आयुक्त

REPORT ON PASSSENGER SATISFACTION SURVEY, 2018-19 CONDUCTED DURING THE PERIOD 21.06.2018 to 27.06.2018

Name of the Airport : **Trichy/Madurai/Coimbatore**

Questionnaire for passenger satisfaction

(Average ra ting on the scale of 01 to 10, 01 being Poor and 10 being Excellent)

		Trichy	Madurai	Coimbatore
1. Are you satisfied with the time taken at Door Frame Metal Detector by the Customs officers?	:	9.6	9.0	9.0
2. Are you satisfied with the time taken for Baggage scanning by the Customs Officers?	:	9.5	9.0	8.9
3. Are you satisfied with the time taken for preparation of Duty Receipts at Red Channel counters?.	:	9.5	9.0	9.3
4. Is the information on display boards containing Customs Rules and Regulations displayed prominently?.	:	9.5	9.0	8.8
5. Are you satisfied with the grievance redressal mechanism of Customs?.	:	9.6	9.0	8.8
6. Is the Help Desk useful?.	:	9.7	9.0	9.5
7. Was the Customs officer Courteous?.	:	9.7	9.0	9.6
8. Overall rating(Cumulative of all Question)	:	9.6	9.0	9.1

जाग सके तो जाग

देवेन्द्र सिंह सिकरवार,
कनिष्ठ अनुवादक

बोधू हलवाई को ज्ञान प्राप्त करने की लालसा हो गई। फिर क्या? पुस्तकों में ज्ञान की खोज शुरू कर दी। कहीं पर पढ़ लिया "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत" इसका आधा अर्थ ही समझ में आया कि उठो, जागो किंतु उसमें भी संदेह हो गया। लगता है कि क्रम उल्टा है, जागो, उठो होना चाहिए था और सोना-जगना सामान्य दैनिक क्रिया है इसमें विशेष बात क्या है? अतः संदेह दूर करने के लिए अध्ययन चालू रखा। एक दिन रामचरित मानस की चौपाई देखी जिसमें लिखा था – **"एहि जग जामिनि जागहिं जोगी"** अर्थात इस जगत रूपी रात्रि में जोगी जागते हैं। उसने सोचा कि इस बात की पुष्टि किसी अन्य ग्रंथ में भी होती है क्या ? अतः भगवत गीता का संदर्भ लिया। उसमें भी लिखा था **"या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी"।** अर्थात सब प्राणियों के लिए जो रात्रि है उसमें संयमी जागते हैं। अब बोधू हलवाई को भरोसा हो गया कि जोगी रात में जागते हैं और उसने भी रात में जागना शुरू कर दिया। रात में जगते-जगते भूख लगी तो मिठाइयाँ खा कर भूख बुझाली, तीसरे दिन तो बोधू की तबियत इतनी खराब हो गई कि डॉक्टर को बुलाना पड़ गया। डॉक्टर कुछ दवा देकर, आराम करने की सलाह दे कर चला गया। पूरा मुहल्ला इकठ्ठा हो गया सब पूछने लगे कि क्या हो गया? कुछ सांत्वना देने लगे कि जल्दी ठीक हो जाएगा। घर वाले कहने लगे कि बीमारी हो तब तो ठीक होगी। इनको कोई बीमारी है ही नहीं, यह सब तो रात भर जागने से हुआ है और अब भी रात में जगने की जिद ले कर बैठे हैं।

तब किसी बुजुर्ग ने बोधू से पूछा कि आखिर माज़रा क्या है? तब बोधू ने कहा कि शास्त्र वचन मानना कोई गुनाह है क्या? आखिर क्यों सब लोग मुझे ही समझा रहे हैं। यह कह कर उसने जो कुछ पढ़ा था बुजुर्ग को बता दिया साथ ही अपनी जिद के समर्थन में उदाहरण पेश कर दिया कि लक्ष्मण जी तो वनवास के समय चौदह वर्ष तक जागते रहे थे। तब बुजुर्ग मुस्कराया तथा बोला बेटा शास्त्र वचन मानना गुनाह नहीं है, शास्त्र वचन मिथ्या भी नहीं है किन्तु उसका सम्यक अर्थ समझना आवश्यक है अन्यथा अनर्थ हो सकता है - गीता का कथन है -

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु। युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा।

जो युक्त आहार और विहार करने वाला है, कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करने वाला है तथा सम्यक शयन और जागरण करता है। ऐसे योगी का योग समस्त दुखों का नाश कर देता है।

अगर तुमने रामचरित मानस की चौपाई पूरी पढ़ी होती तो तुमको जागने का सम्यक अर्थ पता चल जाता पूरी चौपाई इस प्रकार है –

"एहिं जग जामिनि जागहिं जोगी। परमारथी प्रपंच बियोगी।

जानिअ तबहिं जीव जग जागा। जब सब विषय बिलास बिरागा।

अर्थात वही जीव जागा हुआ है जो परमार्थी है प्रपंच से छूटा हुआ है तथा जगत के विषय विलास से जिसको वैराग्य हो गया है। उसी को गीता में स्थितप्रज्ञ कहा गया है। गीता के अनुसार-

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते॥

दुःखों की प्राप्ति होने पर जिसके मन पर उद्वेग नहीं होता, सुखों की प्राप्ति में जो सर्वथा निःस्पृह है तथा जिसके राग, भय और क्रोध नष्ट हो गये हैं, ऐसा मुनि स्थिरबुद्धि कहा जाता है। यानी कि ये जागे हुए पुरुष के लक्षण हैं।

अब रही बात लक्ष्मणजी के 14 वर्ष जागने की तो उसका संकेतात्मक रूप हमें समझना चाहिए अर्थात पाँच कर्म इंद्रियाँ और पाँच ज्ञान इंद्रियाँ तथा अंतःकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) इन चौदह का निग्रह करके जो ईश्वरीय सेवा में लागाता है वही लक्ष्मण है।

वास्तव में अपने ईश्वरीय अंश को जगाना ही जागना है और वह ईश्वरीय अंश सब में मौजूद है – **"जैसे तिल बीच तेल है, ज्यों चकमक में आग,**

तेरा साईं तुझमें है,
जाग सके तो जाग"

यह सुन कर बोधू ने अपनी जिद छोड़ दी, उसकी प्रसंन्नता बता रही थी कि शायद उसको कुछ बोध हो गया।

मिहिका
सुपुत्री, निशित, अधीक्षक

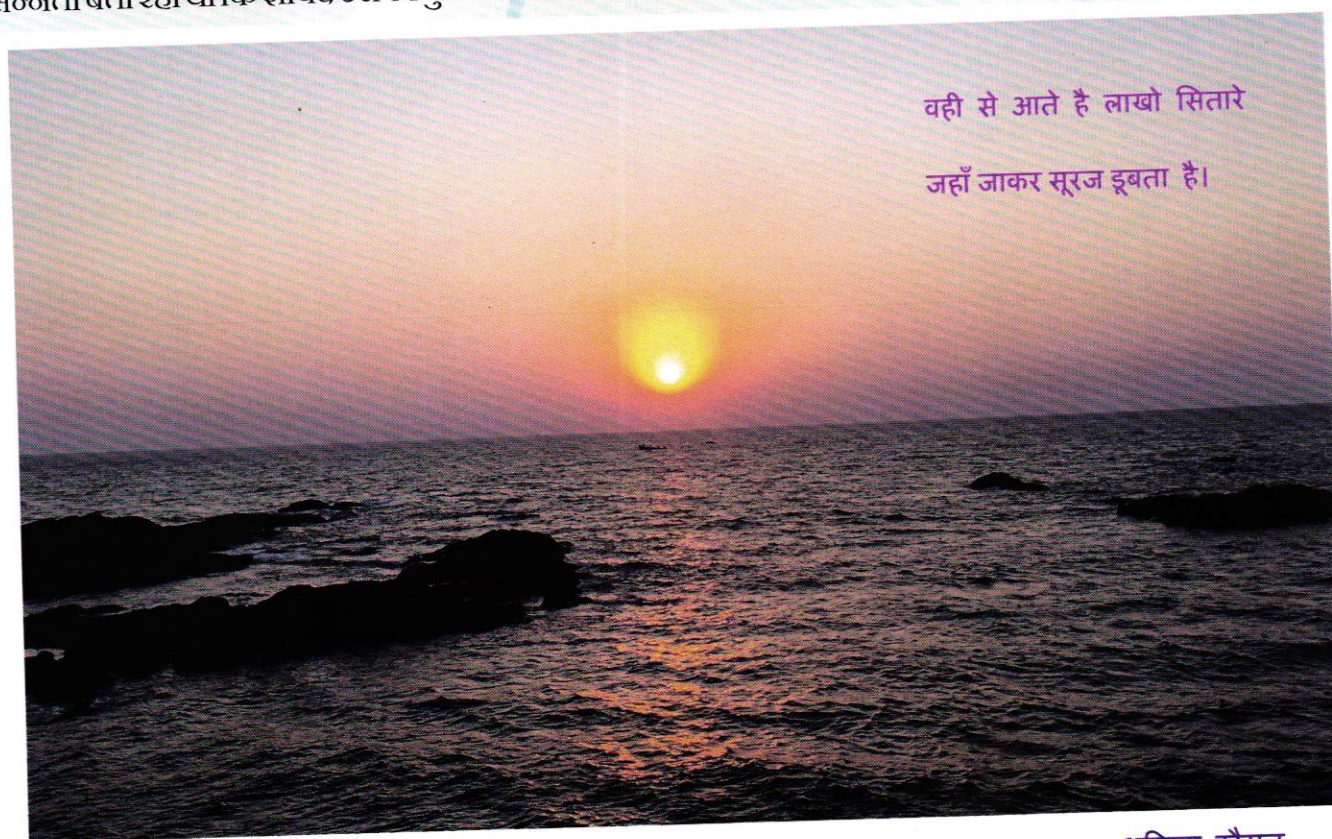

१.फोटोग्राफी प्रतियोगिता में कुमारी अकिला दुरैराज द्वारा खीचा गया प्रथम पुरस्कार प्राप्त फोटो।

अकिला दुरैराज,
निरीक्षक, तिरुच्चि

SEVOTTAM BIS Certification Granted to Trichy Customs (Prev.) Commissionerate

The Central Board of Excise & Customs (now CBIC) has introduced the concept of "SEVOTTAM" in all the Commissionerate, to render quality and time bound services to the Citizens as per the Service Quality Manual (SQM) and also per the "CITIZEN CHARTER".

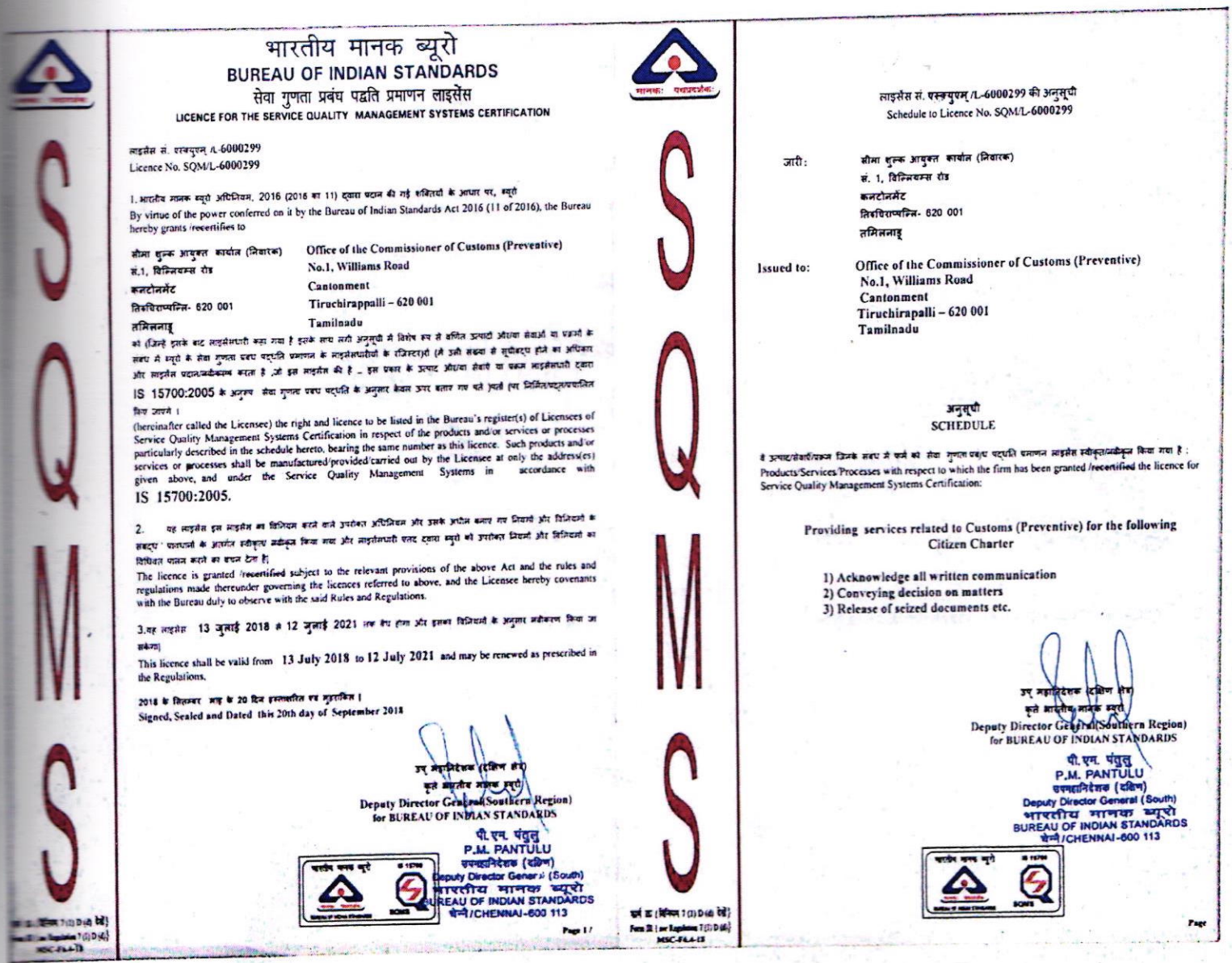

भारतीय मानक ब्यूरो

BUREAU OF INDIAN STANDARDS

सेवा गुणता प्रबंध पद्धति प्रमाणन लाइसेंस

LICENCE FOR THE SERVICE QUALITY MANAGEMENT SYSTEMS CERTIFICATION

Licence No. SQM/L-6000299

1. By virtue of the power conferred on it by the Bureau of Indian Standards Act 2016 (11 of 2016), the Bureau hereby grants /recertifies to

Office of the Commissioner of Customs (Preventive)
No.1, Williams Road
Cantonment
Tiruchirappalli – 620 001
Tamilnadu

(hereinafter called the Licensee) the right and licence to be listed in the Bureau's register(s) of Licensees of Service Quality Management Systems Certification in respect of the products and/or services or processes particularly described in the schedule hereto, bearing the same number as this licence. Such products and/or services or processes shall be manufactured/provided/carried out by the Licensee at only the address(es) given above, and under the Service Quality Management Systems in accordance with IS 15700:2005.

2. The licence is granted /recertified subject to the relevant provisions of the above Act and the rules and regulations made thereunder governing the licences referred to above, and the Licensee hereby covenants with the Bureau duly to observe with the said Rules and Regulations.

3. This licence shall be valid from **13 July 2018** to **12 July 2021** and may be renewed as prescribed in the Regulations.

Signed, Sealed and Dated this 20th day of September 2018

Deputy Director General (Southern Region)
for BUREAU OF INDIAN STANDARDS

पी.एम. पंतुलु
P.M. PANTULU
Deputy Director General (South)
भारतीय मानक ब्यूरो
BUREAU OF INDIAN STANDARDS
चेन्नै/CHENNAI-600 113

Page 1/

Schedule to Licence No. SQM/L-6000299

Issued to: **Office of the Commissioner of Customs (Preventive)**
No.1, Williams Road
Cantonment
Tiruchirapalli – 620 001
Tamilnadu

अनुसूची
SCHEDULE

Products/Services/Processes with respect to which the firm has been granted /recertified the licence for Service Quality Management Systems Certification:

Providing services related to Customs (Preventive) for the following Citizen Charter

1) **Acknowledge all written communication**
2) **Conveying decision on matters**
3) **Release of seized documents etc.**

Deputy Director General (Southern Region)
for BUREAU OF INDIAN STANDARDS

पी.एम. पंतुलु
P.M. PANTULU
Deputy Director General (South)
भारतीय मानक ब्यूरो
BUREAU OF INDIAN STANDARDS
चेन्नै/CHENNAI-600 113

On fulfilling the conditions in line with SEVOTTAM SQM 3.1 & 4.3 the Bureau of Indian Standards (BIS) granted IS 15700::2005 certification on 08.10.201 8 to Trichy Customs (Preventive) Commissionerate.

सीमा शुल्क गृह, तूत्तुक्कुडि में माननीय सदस्य श्री एस.के. पांडा के साथ मुख्य आयुक्त श्री रंजन कुमार राउतरे एवं अपर आयुक्त श्री सुरेश बोड्डूलूरि

सीमा शुल्क गृह, तूत्तुक्कुडि में 100 किलो वाटपीक सौर ऊर्जा उत्पादन परियोजना का उद्घाटन

स्वच्छता जागरूकता अभियान - श्री के.वि.वि.जि. दिवाकर, आयुक्त सीमा शुल्क गृह, तूत्तुक्कुडि एक स्कूल में भाषण देते हुए ।

स्वच्छता जागरूकता अभियान - श्री वी. शिवकुमार, अपर आयुक्त सीमा शुल्क गृह, तूत्तुक्कुडि एक स्कूल में भाषण देते हुए ।

सीमा शुल्क मंडल, कडलूर के अधिकारियों के साथ गजा तूफान के समय बहकर किनारे पहूँचे बंगलादेशी मूल के बॉय के साथ श्री रंजन कुमार राउतरे, मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिराप्पल्लि

अंतर राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस, 2018 पर एक अधिकारी को प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हुए श्री जे. मुहम्मद नवफल, संयुक्त आयुक्त

स्तंत्रता दिवस 2018 के अवसर पर परेड का निरीक्षण करते हुए श्री रंजन कुमार राउतरे, मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिराप्पल्लि।

होली क्रॉस कॉलेज में स्वच्छता पखवाड़े के अवसर पर छात्राओं को संबोधित करते हुए श्री रंजन कुमार राउतरे, मुख्य आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), तिरुच्चिराप्पल्लि।